भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 09 | अंक 24 | उदयपुर बुधवार 01 जनवरी 2025 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

जन्म से मरण तक नारियल का महत्त्व

- कृष्णा राठौड़ -

रूंख वसै पंछी नहीं,
दूध देय नहिं गाय।
तीन नैण संकर नहीं,
इणरो अरथ बताय।।

बिना पंछी का वृक्ष तथा बिना दूध वाली गाय। इसका अर्थ है नारियल।

इस साधारण सी पहेली में छिपे अर्थ को कोई भी ग्रामीण बड़ी आसानी से बता देता है। उभरा हुआ

मस्तक, तीन छेद मानो शंकर के तीन नेत्र, मध्य भाग में नाक के समान उभरी आकृति। बाहरी आवरण जितना कठोर उतना ही भीतर से कोमल, रसदायक, स्वादिष्ट और मिठास भरा। इस फल को अनेक नामों से जाना जाता है- नारेळ, नारिकेर, नाडिकेल, नारिकेली, नालिकेल, तुंग, पयोघर, सूण्डफल। इनमें एक नाम 'श्रीफल' भी है। श्री शब्द संस्कृत में लक्ष्मी का भी प्रतीक है। फल का भावार्थ यहां प्रसाद से लिया गया है। नारियल की सदैव सर्वत्र सभी कालों में, सभी कर्मों में उपयोगिता पाई जाती है।

जन श्रुतियां बतलाती हैं कि विश्वामित्र ने अपने तपोबल से राजा त्रिशंकु को सशरीर स्वर्ग में भेजने की चेष्टा की थी, परन्तु स्वर्ग के महाराज इन्द्र ने इसे वहां प्रविष्ट होने से रोक दिया।

कहा कि मल-मूत्र, दुर्गन्ध से बने हुए आपके शरीर के पापों के नष्ट हुए बिना आप यहां रहने योग्य नहीं हैं। अत: अधोमुख किये वापस पृथ्वीलोक को लौट जाओ। मार्ग में विश्वामित्र को देख उसने सहायता की प्रार्थना की। त्राहि माम्-त्राहि माम् के स्वर को सुनकर विश्वामित्र ने क्रोध में आकर अपने तपोबल से एक नये स्वर्ग की रचना कर दी। यहां पर उल्टे लटके हुए राजा त्रिशंकु ने कहा, राजर्षि अब मेरी कौनसी गति होगी?

विश्वामित्रजी बोले, राजन! कुछ समय बाद देवासुर संग्राम छिड़ेगा जिसमें आपको भी भाग लेना होगा।

इसमें आपके घायल होने पर पृथ्वी पर तेज गर्मी उत्पन्न होगी। शरीर में लगे हुए बाणों से धरती पर जो रक्त की बूंदें गिरेंगीं उनसे लम्बे-लम्बे और ऊंचे-ऊंचे पेड़ विकसित होंगे। उनकी चोटी पर फल लगेंगे जिन्हें नारियल कहा जाएगा। यही श्रीफल या नारियल है। इसे कहीं नारियल, लारेल, ललेर, खोपा, नारेल, पंचकोष कहा जाता है। यह मूलत: दक्षिण भारत की उपज है। सम्पूर्ण केरल प्रदेश इसी फल से जड़ा हुआ है। मलयालम में इसके पेड़ को 'तेंग' और नारियल को 'तेंगा' कहते हैं। केरल के साधारण जनजीवन में नारियल के पेड़ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यह खजूर जाति का पेड़ है। सामान्यत: इस पेड़ की ऊंचाई 18 से 30 मीटर तक होती है। चोटी पर नारियल के गुच्छे लटकते देख हर किसी का दिल इन्हें तोड़ने को ललचा जाता है। देवी-दवताओं के अनुष्ठानों, पूजा, अर्चना, हवन, वाग्दान संस्कार एवं वैवाहिक कार्यों से लेकर विभिन्न प्रकार के रोगों में काम आने वाला यह फल पंचकोष का प्रतीक है।

नारियल के मध्य में जल होता है और इर्दगिर्द पांच कोषों के रूप में पांच आवरण होते हैं जिन्हें हटाने पर

जल निकल आता है। यह मधुर स्वादिष्ट एवं गुणकारी होता है। नारियल का पेड़ एवं फल का प्रत्येक हिस्सा उपयोगी है। तना वर्षों तक पानी में पड़े रहने पर भी सड़ता-गलता नहीं। इसी वजह से तने की लकड़ी से प्राय: नावें एवं बांध बनाए जाते हैं।

दक्षिण भारत के सामान्य परिवारों में इसकी डाली (टहनी) को तोड़कर दांतून के रूप में काम में लेते हैं। पत्तों की टहनियों को गांवों में लोग कच्चे घरों की दीवारें बनाने, छप्पर बनाने एवं ईधन के रूप में उपयोग करते हैं। इनसे बने घरों को केरल में 'ओयला' कहा जाता है। फर्नीचर, टोकरियां, चटाइयां, थैले, रस्सी, ब्रश बनाने में भी इसी का उपयोग होता है। केरल के बने पायदान एवं झाड़ू विश्वभर में प्रसिद्ध हैं।

नारियल को सुखा कर खोपरे से बड़े पैमाने पर तेल निकाला जाता है। अधिकांशत: दक्षिण भारत के लोग खाद्य पदार्थों में इसी के तेल का प्रयोग करते हैं। लोकप्रिय खाद्य सामग्री पालअपम के अलावा तेल से साबुन, कांतिवर्धक प्रसाधान-वस्तुएं तैयार की जाती हैं। इसके कवच को पीसकर उससे बने पाउडर से बिजली का सामान बनाया जाता है।

खोपरे से तेल निकालने के बाद बड़े पैमाने पर बची सामग्री को मिलाकर पशु आहार तैयार किया जाता है। इसका तेल बालों की जड़ों तक सुगमता से पहुंच जाता है। इसी कारण दक्षिण भारत के लोगों के बाल ढलती उम्र तक काले दिखाई देते हैं। मध्यम, सामान्य श्रेणी के परिवारों में इसके वृक्ष लड़कियों को दहेज में दिये जाते हैं। दहेज में दिये गए पेड़ों से हर वर्ष होने वाली आय लड़की की सम्पत्ति मानी जाती है।

नारियल के विकसित होते फल पर लगे फूल को काटकर एक खट्टा-मीठा पेय पदार्थ निकाला जाता है जिसे 'टांडी' कहते हैं। इसको अक्सर सूर्योदय के समय ही काटकर ताजा पेय के रूप में पीते हैं। काटने के बाद इसे देर से पीने पर इसमें एल्कोहल की मात्रा बनने लग जाती है।

राजस्थानी लोकजीवन में नारियल बालक के जन्म से मृत्यु तक प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान में काम लेते हैं। बच्चे के जन्म पर होने वाले नामकरण संस्कार, विवाह, सगाई के दस्तूर पर सोने-चांदी का कवच चढ़ाकर नारियल भेंट करने की परम्परा देखने को मिलती है। विवाह में बारात की विदाई पर भी बाराती को नारियल दिये जाते हैं। बहू की खोल भरने, बनौरी निकालने, पडुलो ले जाने के समय भी नारियल का होना जरूरी है।

लोकगीतों में भी नारियल समाया हुआ है। अनेक स्थानों पर स्थानीय पर्व भी इस फल से जुड़े हैं। ग्रामीणों में आज भी ऐसी मान्यता है कि विपत्ति के समय में रूग्णावस्था में इस फल का अर्चना कर दक्षिणा सहित दान देते हैं। जिगर की बीमारी में इसका जल विशेष लाभप्रद है। स्त्रियों के प्रदर रोग में भी इसका उपयोग होता है।

सिर दर्द दूर करने के लिए इसकी गिरी को इसबगोल के साथ शुद्ध घी में भुनकर चीनी मिलाकर नित्य प्रति प्रयोग करने से लाभ होता है। ह्रदय रोगी भी दवा के रूप में इसका प्रयोग करते हैं। 'भींत में भैरूजी बोले' कहावत नारियल के साथ जुड़ी हुई है। वृक्ष की ऊंचाई पर लगने के कारण इसको अधरगंगा भी कहते हैं।'

पेड़-पौधों की पूजा-परम्परा

-डॉ. ज्ञानप्रकाश पिलानिया-

मरुस्थल के लोगों ने पेड़-पौधों का महत्त्व स्वीकार कर उनकी सुरक्षा एवं संवर्धन के लिए भी गंभीर एवं व्यापक प्रयास किये हैं। इन पेड़-पौधों का मानवीकरण कर इनमें देवताओं का वास बतलाया है। नीम में नारायण, पीपल में विष्णु, बड़ में शिव का वास बताकर उनको बचाने के प्रयास किये हैं।

यहां कम वर्षा होने के कारण सघन वनों का अभाव है परन्तु यहां के लोगों ने गोचर, औरण तथा डोली व्यवस्था द्वारा पेड़ों को बचाने की परम्पराएं विकसित की। किसी देवी-देवता, भोमिया तथा लोकदेवता के नामों से 'औरण' बनाकर वृक्षों को संरक्षित किया।

औरण भूमि से किसी भी प्रकार के पेड़ की हरी टहनी भी काटना प्रतिबन्धित होता है। इसके कारण आज भी गांवों में औरण के नाम पर वृक्षों की रक्षा होती है।

खेजड़ी राजस्थान के लोकजीवन का धार्मिक वृक्ष है। जोधपुर जिले का गांव 'खेजड़ली' तो राजस्थान का वृक्ष-संरक्षण का तीर्थस्थल है। विश्व में शायद ही ऐसा कोई स्थल होगा, जो वृक्ष-रक्षा हेतु बलिदान की परम्परा से जुड़ा हो। रूंख देवता यानी वृक्ष देवता के इस तीर्थ-स्थल को इतिहास का ऐसा पन्ना कहा जाता है जिसने पेड़ों के लिए हुए 302 विश्नोई महिलाएं-पुरुषों के अमर बलिदान की कथा अपने में संजो रखी है।

दशनोक के करणीमाता मन्दिर के बारह कोस, लगभग 36 किलोमीटर की परिक्रमा में सुरक्षित पेड़ों का स्थल औरण छोड़ी गई है। यहां कभी कोई पेड़ नहीं काटता। वर्षों से यह परम्परा अनवरत चली आ रही है। यहां औरण भूमि पर नेहड़ीजी का मन्दिर है जहां किसी वार-त्यौहार या अवसर विशेष पर नहीं बल्कि प्रतिदिन ही खेजड़ी के वृक्ष की पूजा होती है।

राजस्थान के लोकजीवन में रूंख यानी पेड़ों की महिमा का गान है। लोग तीज-त्यौहार पर ही नहीं बल्कि प्रतिदिन ही अपनी दिनचर्या की शुरूआत घर में लगे पेड़ पूजन से ही करते रहे हैं। कोई शुभ कार्य यदि घर में होता है तो उसका आरम्भ वृक्ष या उसकी टहनी के पूजन से होता है। यहां की लोकसंस्कृति में मनुष्य और वृक्षों का अभी भी गहरा सम्बन्ध है।

शहरों में तो फिर भी आबादी के विस्तार के साथ प्राचीन काल से चली आ रही लोक-परम्पराएं लोप होती जा रही है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्ष पूजा से अभी भी बहुत से स्तरों पर लोग जुड़े हुए हैं। गांवों में 'वृक्ष में राम रो वासो', वृक्ष में राम का निवास है कहते हुए पेड़ों से लोगों का गहरा जुड़ाव है।

वृक्षों में भी नीम में नारायण का रूप देखकर उसे पूजा जाता है। गांव-गांव में गोगा-खेजड़ी की पूजा का विधान है। गोगाजी राजस्थान के लोकदेवता हैं। खेजड़ी का वृक्ष विशेष रूप से राजस्थान के मरुस्थली भाग में ही पाया जाता है सो गांवों में लोकदेवता गोगाजी से जुड़ा हुआ मानते हुए खेजड़ी धोकी यानी पूजी जाती है।

गांव-गांव माताजी, भैरूजी, भोमियाजी आदि देवी-देवताओं के नाम से औरण भूमि आरक्षित करने का भी प्रावधान है। लोकजीवन में औरण की बाड़ , कांटों के पौधों से की जाने वाली चारदीवारी से सुरक्षित रखी जाती है। यहां पर उगने वाले किसी भी प्रकार के पौधे की एक टहनी तक को तोड़ना और पेड़ को किसी प्रकार की हानि पहुंचाना तक पाप माना जाता है।

लोकजीवन में पीपल के पेड़ में परमेश्वर का वास माना जाता है। इसीलिए उसके पूजन की परम्परा बरसों से चली आ रही है। पूजन के साथ ही बाकायदा पीपल पूर्णिमा में कोई भी कार्य करें तो उसके लिए किसी प्रकार के मुहूर्त निकालने की जरूरत नहीं है।

उस दिन सब शुभ ही शुभ होता है। पीपल सींचने को राजस्थान के लोकजीवन में सबसे बड़ा धर्म माना गया है। गांव-गांव में ही नहीं, शहरों में भी लोग इसीलिए पीपल पूजते हैं और पीपल के पेड़ को किसी भी स्थिति में काटा नहीं जाता है।

वृक्ष पूजन की परम्परा राजस्थान में नित्य कर्म के साथ ही विशेष रूप से तीज-त्यौहारों से जुड़ी हुई है। चैत्र महीने में गणगौर पूजन होता है। भौर में अविवाहित कन्याएं गीत गाती हुई फोग, मरुस्थली वनस्पति के फूल चुनकर कलसे की गवर बनाकर महादेवजी से अच्छे वर प्राप्ति की कामना करती हैं।

विक्रम संवत् और विक्रमादित्य

-प्रो. श्री वासुदेवशरण अग्रवाल -

विक्रम संवत् के विषय में कुछ बातें पुरातत्व के निश्चित आधार से ज्ञात होती हैं, और कुछ के लिये केवल साहित्यिक अनुश्रुति प्रमाण है। शिलालेखों से प्राप्त होने वाली सामग्री का सुंदर उल्लेख डॉ. अल्टेकर ने इसी अंक में प्रकाशित अन्यत्र अपने लेख में किया है। हमारे अब तक के ज्ञान की स्थापनाएँ संक्षेप में इस प्रकार हैं-

1. विक्रम संवत् का प्रारंभ 57 ई. पूर्व में हुआ।

2. नवीं शताब्दि के आसपास इसका नाम विक्रम संवत् पड़ा। उससे पहले इसकी संज्ञा मालव संवत थी। सं. 898 के चंड महासेन के धौलपुर शिलालेख में अब तक विक्रम संवत् का सब से पहला उल्लेख प्राप्त हुआ है; किन्तु इसके 38 वर्ष बाद के ग्यारसपुर (ग्वालियर) के लेख में इसे 'मालवेशों का संवत्' कहा गया है। इससे ज्ञात होता है कि नवीं और दसवीं शताब्दियों के लगभग लोक में यह विश्वास था कि यह विक्रम संवत् मालेवेशों का स्थापित किया हुआ था। सं. 1131 के चालुक्य कर्कराज के नवसारी ताम्रपट्ट ने इस संवत् को निश्चित रूप से विक्रमादित्य के द्वारा आरंभ किया हुआ संवत्सर कहा है (श्री विक्रमादित्योत्पादित संवत्सर)। अतएव कम से कम एक सहस्र वर्ष पूर्व हमारी जनता का यह दृढ़ विश्वास था कि विक्रमादित्य नाम के द्वारा इस संवत्सर की स्थापना हुई।

3. मालव संवत् नाम पड़ने से पहले विक्रम संवत् का नाम कृत संवत था। मंदसोर से प्राप्त नरवर्मा के सं. 461 के लेख में ऐतिहासिक स्थिति का ठीक-ठीक वर्णन किया गया है और सूत्र रूप में इस संवत् के प्राचीन नाम और उसके क्षेत्र का निर्देश कर दिया गया है -

श्रीमालवगणाम्नाते प्रशस्ते कृतसंज्ञिते।
एकषष्ट्यधिके प्राप्ते समाशतचतुष्टये॥

यह राजा नरवर्मा सं. 461 (404 ई.) में चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के समकालीन थे और संभवत: उनकी ओर से मालव के अधिपति शासक थे। गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने मालव को विजित किया था और वहाँ पर जो चाँदी के सिक्के जारी किए उन पर इस प्रकार अपना विरुद लिखा है -

परमभागवत महाराजाधिराज श्रीचंद्रगुप्तविक्रमादित्यस्य।

ई. सन् 400 के लगभग उत्तर भारत और मालवा में चंद्रगुप्त का राज्य था और 'विक्रमादित्य', 'विक्रमांक' या 'विक्रम' विरुद घर घर में प्रचलित था। रीवा राज्य के सुपिया नामक गाँव से अभी हाल में मिले एक गुप्तलेख में वंशावली देते हुए श्री समुद्रगुप्त के पुत्र को विक्रमादित्य और विक्रमादित्य के पुत्र को महेंद्रादित्य कहा गया है। चंद्रगुप्त और कुमारगुप्त नाम नहीं दिए गए। जब विक्रमादित्य नाम इस प्रकार सर्वत्र प्रसिद्ध था और मालवे से उसका विशेष संबंध था, तब भी 400 ई. के लगभग यही प्रसिद्ध था कि इस संवत् का नाम कृत संवत है, और मालवा में इसकी प्रसिद्धि और इसकी स्थापना हुई। मालवा से बाहर और सब जगह गुप्त साम्राज्य में गुप्त संवत् का प्रयोग हो रहा था, कृत संवत् या विक्रम संवत् का नहीं।

अब तक कृत संवत का पहली बार नाम और प्रयोग उदयपुर (मेवाड़) रियासत के नांदसा स्थान से प्राप्त संवत् 282 (225 ई0.) के यूप-लेख में पाया गया है। यह संयोग की बात है कि जन्म के बाद करीब पौने तीन सौ वर्षों तक इस संवत् के प्रयोग का कोई उदाहरण हमारे लिये नहीं बचा। इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रारंभ के तीन सौ वर्षों में इसका प्रयोग और प्रचार था ही नहीं। ऐतिहासिक पद्धति से सही अनुमान यही निकलता है कि उन तीन सौ वर्षों में भी इस संवत् का नाम कृत संवत् था और मालवों में इसका प्रचार था। उनमें यही अनुभूति विख्यात होगी कि उनके गण की स्थापना से कृत संवत का प्रारंभ हुआ।

विक्रम की तीसरी शताब्दि से छठी शताब्दि तक कृत संवत के जो लेख अब तक मिले हैं उनसे एक बात अच्छी तरह मालूम होती है कि इन तीन सौ वर्षों तक कृत संवत का प्रयोग अक्षांश और देशांश के एक परिमित क्षेत्र में ही हुआ। नांदसा (उदयपुर, सं. 282), बर्नाला (जयपुर, सं. 284), बड़वा (कोटा, सं. 295), विजयगढ़ (भरतपुर, सं. 428), मंदसोर (मालवा, सं. 461, 493, 529, 589) और नगरी (चित्तौड़, सं. 481) इस क्षेत्र की सीमाओं को सूचित करते हैं। मोटे तौर पर दक्षिणी जयपुर से उज्जैन तक के प्रदेश में मालवगण का विस्तार था और वहीं पर कृत संवत् का प्रयोग हुआ। इस क्षेत्र के बाहर काल-गणना के दूसरे प्रकार प्रचलित थे। बाहर जब गुप्त संवत् जैसे प्रतापी संवत् का व्यापक प्रचार था उस समय भी मालवक्षेत्र में मालवगण के अपने कृत संवत् में ही कालगणना होती थी। यह इस बात का प्रमाण है कि मालवगण का इस संवत् के साथ कितना घनिष्ठ और अंतरंग संबंध था। शिलालेख भी इसका दृढ़ साक्ष्य देते हैं कि मालवगण की स्थापना से संवत् की काल-गणना का प्रारंभ हुआ-मालव-गणस्थिति-वशात् काल-ज्ञानाय लिखितेषु।

(यशोधर्मन् का मंदसोर लेख, सं. 589, ई. 532)।

मालवगण-स्थिति मालवगण की स्थिति शब्द का ठीक अभिप्राय क्या है? हमारी सम्मति में स्थिति का सीधा अर्थ स्थापना है। मालवगण की स्थापना का यह अर्थ नहीं है कि उस गण की सत्ता पहले अविदित थी। मालव जाति का जो इतिहास अब तक ज्ञात है उसके अनुसार ई. पू. चौथी शताब्दि में मालव पंजाब में बसे थे। क्षुद्रकों के साथ मालवों का बड़ा मेल था और दोनों का संयुक्त सैनिक संगठन बड़ा प्रचंड था।

पाणिनि के 'खंडकादिभ्यश्च' सूत्र के गणपाठ में क्षुद्रक और मालवों की समिलित सेना को क्षौद्रकमालवी सेना कहा गया है (क्षुद्रकमालवात्सेना सज्ञायाम्)। मालवों ने सिकंदर से रणभूमि में लोहा लिया था। सिकंदर के साथी यूनानी इतिहासकारों ने मालव युद्ध का बड़ा ही रोमांचकारी वर्णन किया है। वीर मालवों के एक भीम बाण ने सिकंदर के पाव को भेदकर उसे लगभग मृत्यु के मुख तक पहुँचा दिया था। मालवों का यह कराल क्रोध उस यूनानी सेनापति के काल को निकट खींच लाया और कुछ ही महीनों बाद स्वदेश पहुँचने के पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। छह फुट के धनुष पर नौ फुट का बाण छोड़ने वाले ये मालव अत्यंत पराक्रमी और स्वातंत्र्यप्रेमी थे। विदेशी सत्ता के प्रति उनका प्रतप्त क्रोध पंजाब में भली भाँति प्रकट हो चुका था। उसी की पुनरावृत्ति लगभग तीन सौ वर्ष बाद प्रथम शताब्दि ई. पू. में आकर अवति में हुई जबकि शकस्थान के क्षहरातवंशी शकों ने सुराष्ट्र पर आक्रमण किया। शिलालेख से यह निश्चय ज्ञात है कि प्रचंड मालवों से उनकी भिड़ंत हुई।

दूसरी शताब्दि ई. पू. के लगभग हम मालवों को जयपुर रियासत में बसा हुआ पाते हैं। कर्कोट नगर इन मालवों का प्रधान केंद्र था जहाँ उनके अनेक सिक्के मिले हैं। इन सिक्कों पर 'मालवानां जय:' विरुद अंकित है। ये मालव पंजाब से यहाँ आकर बसे थे। यूनानी आक्रमण के बाद कई गणराज्य पंचनद से होकर राजपूताने की ओर चले आए। उनमें से चित्तौड़ के समीप नगरी स्थान में शिवि जनपद के लोग आकर बसे और जयपुर रियासत में मालवगण ने सन्निवेश किया। यह बात सिक्कों की सामग्री से प्रमाणित होती है।

लगभग सौ डेढ़ सौ बरस तक मालव सुख-शांति से निवास करते रह होंगे, जबकि ई. पू. प्रथम शताब्दि के लगभग एक नया भय उपस्थित हुआ। शकस्थान के शकों की क्षहरात नामक शाखा ने पश्चिमी भारत की ओर बढ़कर सुराष्ट्र पर आक्रमण किया और कुछ काल के लिये वहाँ अपना दखल जमा लिया। इस वंश के दो राजाओं के सिक्के और लेख मिले हैं। इनमें पहला भूमक और दूसरा नहपान था। क्षहरात शकों के इस आक्रमण की एक धारा तक्षशिला के मार्ग से घुसती हुई मथुरा तक पहुँची लेखों और सिक्कों से तक्षशिला और मथुरा के क्षहरात घरानों का भी परिचय मिलता है। मथुरा में क्षहरात महाक्षत्रप राजुबुल और शोडास ने दो पीढ़ी तक राज्य किया।

तक्षशिला में इसी समय महाक्षत्रप लिक और पतिक का राज्य था जो मथुरा के शकों से संबधित भी थे। शकों का यह त्रिशूलों आक्रमण कुछ टिकाऊ नहीं हुआ, किंतु करारा अवश्य था। नहपान के जो लेख नासिक की गुफा में मिले हैं उनसे विदित होता है कि उत्तमभद्रों और मालवों में कुछ लाग-डॉट थी। इस आपसी वैर में उत्तमभद्रों ने विदेशी शहरातों से सहायता की पुकार की। शकों ने उत्तमभद्र का पक्ष लेकर मालवों को दबाया। इस घटना का उल्लेख क्षहरातवशीय क्षत्रप नहपान के जामाता उषवदात के लेख में इस प्रकार आया है

- गतोस्मि वर्षास्तु मालयेहि...हि रुधं उतमभाद्रं मोचयितु ते च मालया प्रनादेनेव अपयाता उतमभद्रकानं च क्षत्रियानं सर्वे परिग्रहा कृता।

अर्थात् 'इस वर्षा-ऋतु में मालवों से छेके हुए उत्तमभद्रों को छुड़ाने के लिये मैं गया। वे मालव मेरी हुंकार से ही भाग गए और उत्तमभद्र क्षत्रियों को मैंने सब प्रकार से सुरक्षित कर दिया। इतना करने के बाद पुष्कर में जाकर मैंने स्नान किया और ब्राह्मणों को अनेक दान दिए।' (ए. ई. 8178) अनुमान होता है कि उत्तमभद्र अजमेर-पुष्कर के इलाके में थे। इस शिलालेख से यह सिद्ध होता है कि मालवों पर घोर संकट आया।

इस संकट से अपनी रक्षा करने के लिये स्वतंत्रता के अभिमानी मालवगण ने अवश्य ही अपना सगठन दृढ़ किया होगा। विदेशी आक्रमणकारियों से सुराष्ट्र और स्वधर्म की रक्षा के लिये देश के अन्य क्षेत्रों में भी एक प्रबल भावना जाग्रत हुई होगी। इस बात का निश्चित अनुमान करने का हमारे पास कारण यह है कि केवल दो पीढ़ी राज्य करके मथुग और सुराष्ट्र के शहरात शकों का अंत हो गया, जिससे इतिहास में आगे उनका कोई चिह्न शेष नहीं रह गया।

इस कशमकश और विदेशियों के साथ भिड़त में एक महाप्रतापी सम्राट का नाम सामने आता है। उन्होंने जो अतुल पराक्रम किया उसकी उपमा में पूर्व काल और उत्तरकाल के बहुत ही कम विजेता रखे जा सकते हैं। ये सम्राट् दक्षिणापथेश्वर सातवाहनव शीय राजराज गौतमीपुत्र श्री शातकर्णि थे। हमारे सौभाग्य से इनकी माता महादेवी गौतमी बालश्री का एक लेख नासिक की गुफा में सुरक्षित रह गया है, जिसमें महाराज शातकर्णि के पराक्रम और दिग्विजय का अभूतपूर्व चित्र प्राप्त होता है। महाराज गौतमीपुत्र हिमवान्, सुमेरु और मंदराचल पर्वतों के समान सारयुक्त थे। पराक्रम में वे यह शिलालेख इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित है।

राम, केशव, अर्जुन और भीमसेन के तुल्य थे। तेज में वे भाभाग, नहुष, जनमेजय, सगर, ययाति, राम और अंबरीष के सदृश थे। उन्होंने शकयवन-पलहवों का नाश किया और खखरात (क्षहरात) वंश को नि:शेष करके सातवाहन कुल के यश की स्थापना की। सर्व मंडल में उनके चरणों की अमिव दमा की गई। चातुर्वण्य के संकर को उन्होंने रोका। अमेक युद्धों में शत्रसंघ को पराजित किया और अपराजित विजय पताका फहराई। अभय की जलांजलि देकर सबको निर्भय बनाया।

भुजगेंद्र के समान उनकी विपुल वीर्ष भुजाएँ थी और गजेंद्र के सुंदर विक्रम के समाम उनका विक्रम था (वरवारण विक्रम पासविक्रमाय)। उसके शासन को सब राजमंडल ने स्वीकार किया। वे वेदादि शास्त्रों के आधार (आगम मिलय) थे। कुलपुरुषों की परंपरा से उनको 'राज' शब्द प्राप्त हुआ था। उनका प्रताप अपरिमित, अक्षय, अचिंत्य और अद्भुत था। उनकी माता महाराज पुलमावी को पितामही सत्यवचन, दान, क्षमा और अहिंसा में निरत एवं तप, दम, नियम और उपवास में सत्पर, राजर्षिवधू शब्द को धारण करने वाली प्रार्यका महादेवी गौतमी बालश्री थीं। महाराज शातकर्णि ने असिक, (कृष्णवेणा नदी के किनारे का राज्य), अश्मक (प्रतिष्ठान), मूलक (गोदावरी के तट पर), स्वराष्ट्र, कुकुर, अपरांत, अनूप, विदर्भ, आकर और अति के देशों में राज्य किया, तथा विध्य, ऋक्ष, पारियात्र, सम, कृष्णगिरि, मलय और महेंद्र पर्वतों का स्वामित्व प्राप्त किया।

मालव, महेंद्र और विध्य के विस्तृत त्रिकोण में राज्य का विस्तार करने वाले एकछत्र शासक गौतमीपुत्र श्री शातकर्णि ने शक, पल्हव और यवनों का विवसन किया और अश्मक, आकर, अवाति को अपने विजित में मिलाया। इस घटना की ऐतिहासिक संगति पूर्वापर घटनाओं पर विचार करते हुए इस प्रकार समझ में आती है। उसमभद्रों ने मालवों के विरुद्ध अपने वैर का निर्यातन करने के लिये विदेशी शहरात शकों का आवाहन किया, परंतु मालवों ने शातकर्णि को अपनी सहायता के लिये बुलाया।

इस अनुमान की ओर संकेत करने वाली एक ऐतिहासिक कड़ी भी प्राप्त है। एक ओर मालव और शहरातवंशी नहपान के संबंध की बात पुरातत्व-प्रमाणित है, दूसरी ओर गौतमीपुत्र शातकर्णि और शक-पल्हव युद्ध का भी शिलालेख में वर्णन है। यदि यह जाना जा सके कि जिन शकों से गौतमीपुत्र का संघर्ष हुआ था वे भो नहपानवशी थे तो यह चित्र पूरा हो सकता है।

यह जान लेने पर कि मालवों के जो वैगे थे, वे ही शातकर्णि से परास्त हुए, हम मालव और शातकर्णि के बीच की राजनीतिक संधि की निश्चित कल्पना कर सकते हैं। इस शृंखला की पूर्ति सिक्कों से होती है। भारतीय मुद्राशास्त्र में यह भली भाँति विदित है कि शातकर्णि ने नहपान की विजय के उपलक्ष्य में उसके सिक्कों पर फिर से अपने नाम की छाप लगवाई। (स्मिथ, प्राचीन भारतवर्ष का इतिहास, पृ. 221) जोगलतम्मी स्थान से प्राप्त 13000 नहपान के सिक्कों में से अनेकों पर शातकर्णि ने पुन: अपना नाम अंकित कराया है (वही, पृ. 232)।

मुद्राशास्त्र का यह प्रमाण बहुमूल्य है और इससे सिद्ध होता है कि शातकर्णि ने जिन शकों को परास्त किया था वह नहपान का वंश ही था। यह स्मरण रखना चाहिए कि शकों को दो धाराएँ भारतवर्ष में आई। पहली बार के शक शहरातवंशी थे जिनका वर्णन ऊपर किया गया है। दूसरी बार के शकों में मथुरा के कुषाणवंशी वेम कदफ, कनिष्क आदि थे तथा उज्जयिनी के चष्टन, रुद्रदामा आदि थे। इन्हें भारतीय इतिहास में शाहानुशाहि शक कहा गया है। देवपुत्र शाहानुशाहि शक और पहरात शकों में अवश्य ही समय का व्यवधान मानना पड़ेगा। हम इन दोनों को एक साथ नहीं रख सकते। स्मिथ ने मथुरा के रंजुवुल-सुदास को प्रथम शती ई. पू. में रखा है (वही, पृ. 241) और शहरात शकों को प्रथम शती ई. के आरंभ में माना है।

यह स्थापना किसी प्रकार समीचीन नहीं मानी जा सकती। भूमक की मुद्राओं और पल्हवों की मुद्राओं में बहुत कुछ साम्य पाया जाता है। प्रथम शती ईस्वी पूर्व में शकस्थान पल्हवों के अधिकार में था। वस्तुत: पल्हव और शहरात शक दोनों एक ही राजनीतिक चक्र के अंतर्गत थे। इस संयुक्त सैनिक शक्ति को पश्चिमी भारत से गौतमीपुत्र शातकर्णि ने निर्मूल किया। इसीलिये शिलालेख में गौतमीपुत्र को शंक और पल्हव दोनों का विध्वंस करने वाला कहा गया है। मालूम होता है कि बाहीक के यूनानी शासक भी इसी विदेशी चक्र के पोषक थे, अतएव शातकर्णि के शक्तिशाली उत्कर्ष के आगे वे भी अवरुद्ध हुए। नासिक के लेख में भवति और आकर को गौतमीपुत्र के राज्य के अंतर्गत लिखा गया है। मालवों के साथ उसकी राजनीतिक संधि को ध्यान में रखते हुए इसमें कुछ आश्चर्य नहीं मालूम होता।

शकों की पराजय के बाद मालवगण ने स्वतंत्रता का अनुभव किया। हमारी सम्मति में स्वतंत्रता को यह स्थापना ही मालवगण को स्थिति थी जिसका मालव-कृत संवत् के लेखों में कई बार उल्लेख है। पहली बार मालवगण अवंती-पाकर में प्रतिष्ठित हुआ और तब से वह भूप्रदेश मालव कहा जाने लगा। गौतमीपुत्र शातकर्णि के लेख में कहा गया कि उसने अनेक विशाल आनंदोत्सवों का आयोजन किया (क्षण-प्रोत्सव-समाजकारकस्य)।

दिग्विजय के उपलक्ष्य में ऐसा करना स्वाभाविक था। मालवों ने भी इस विजयोल्लास के आनंद में भाग लिया होगा। शकों के हुंकार से मालवगण भयभीत होकर तितर बितर हो गया था - ते च मालया प्रनादेनैव अपयाता। (नासिक लेख) वही मालव विदेशियों का पराजय और स्वराज्य की स्थापना के बाद स्वदेश में पुन: संघीभूत हुए एवं उनका गण सुप्रतिष्ठित हुआ। यही घटना 'मालवगणस्थिति' थी। उस स्थिति के वर्ष से हो कृत से शक कालगणना का प्रारभ मालवों में होने लगा।

कृत का अर्थ कृत शब्द के कई अर्थ सुझाए गए हैं-

(1) किया गया; (2) ज्योतिष का एक शब्द जो चार से विभक्त हो जानेवाले वर्ष के लिये प्रयुक्त होता है। डॉ. अल्तेकर ने अपने लेख में कृत नाम के मालवगण-प्रधान या सेनापति की कल्पना की है, किंतु वे स्वयं मानते हैं, कि इसका कोई आधार नहीं है। हमारी सम्मति में कूत का अर्थ सतयुग या स्वर्णयुग लेना चाहिए। इस अर्थ का समर्थन प्राचीन वैदिक परंपरा से होता है। ऐतरेय ब्राह्मण के चरैवेति गान में कृतादि परिभाषाओं की व्याख्या करते हुए लिखा है-

कलि: शयानो भवति संजिहानस्तु द्वापर:।
त्तिष्ठस्त्रेता भवति कृतं संपद्यते चरन्।

सोने वाले का नाम कलि है, अंगड़ाई लेनेवाला द्वापर है, उठकर खड़ा होने वाला त्रेता है और चलने वाला कृतयुगी होता है। अथर्ववेद के पृथिवीसूक्त में 'उदोराणा सतासीनास्तिष्ठन्त: प्रक्रामन्त:' मंत्र में इन्हीं चार अवस्थाओं का निरूपण है जिसमें कृत के लिये प्रक्रम या पराक्रम की अवस्था कहा गया है। विशेष पराक्रम या विक्रम के द्वारा आदर्श सतयुग की स्थापना कृत है।

- शेष पृष्ठ सात पर

स्मृतियों के शिखर (196) : डॉ. महेन्द्र भानावत

अकाल के अनाज जीवन जीने के काज

पृथ्वी पर सर्वाधिक हिस्सा पेड़-पौधों का माना गया है। शास्त्रों में तो नहीं पर लोक में पृथ्वी को अलग-अलग भागों में विभाजित कर उसका नापजोख किया गया है। यह लोकविज्ञान समझना हो तो लोक में भ्रमण करिये, लोगों से रू-ब-रू होइये। उनके साथ रहिये, बैठिये, बंतळ करिये। उनके जीवनधर्म को समझिये। ज्ञान के, बुद्धि के, समझ के, सीख के खजाने-दर-खजाने, परत-दर-परत मिलेंगे। इनका कोई पार नहीं है। कोई हिसाब नहीं है। कोई दस्तावेज नहीं है।

प्रो. भंवरसिंह सामौर ने अपनी गहरी पैनी दृष्टि से लोक को, वहां के लोगों को, वहां की संस्कृति को देखा, परखा तथा संवारा है। उन्होंने लिखा- 'हमारे यहां के लोग अपने हिसाब से पृथ्वी का नाप रखते हैं। उन्होंने इसे पचास क्रोड़ में विभाजित किया और बताया कि पांच क्रोड़ भाग में पर्वत, सात में समुद्र, आठ में नाग, दो में अंधियारा, दो में पक्षी, दो बेकार खाद्य युक्त और तेरह क्रोड़ हिस्से में पेड़-पौधे हैं। भूमंडल के बाद जलमंडल है। पानी के सारे साधन वर्षा पर निर्भर हैं। इसलिए जल का प्रयोग घी की तरह किया जाता है- 'बरतै जल ज्यूं घीव।'

वे लिखते हैं- नक्षत्रों का ज्ञान भी लोगों को खूब है। रोहिणी में गर्मी फिर मृग में तेज हवा चलती है। इस नक्षत्र के पहले दो दिन हवा नहीं चले तो टिड्डी का प्रकोप, उससे अगले दो दिन हवा नहीं चले तो कातरे का प्रकोप, उससे अगले दो दिन हवा नहीं चले तो चूहों का प्रकोप, उससे अगले दो दिन हवा नहीं चलने पर बुखार का प्रकोप, उससे दो दिन हवा नहीं चलने पर झोलर अर्थात् गर्म हवा और उससे अगले दो दिन हवा नहीं चले तो महामारी अर्थात वर्षा का अभाव और उससे आगे दो दिन हवा नहीं चलने पर मंदी का दौर शुरू हो जाता है। मृग नक्षत्र के अंतिम दिन यानी 21 जून को खोड़िया मृग आता है। उसके बाद आद्रा नक्षत्र आता है- 'आदरा भरै खादरा।' आदरा में हवा चले तो अच्छी नहीं मानी जाती फिर पुनर्वसु नक्षत्र आता है। कहावत भी है- 'पुनरवसु बायला तो मामा है न भायला, कनै व्है सो खायला।'

राजस्थान में तो काल सदा ही रूठा रहा है। इन दिनों पानी का सर्वाधिक अभाव रहता है। वर्षा नहीं होने पर इन्द्रदेव को मनाने नानाप्रकार के जतन किये जाते हैं। कई प्रकार के टोटके प्रचलित हैं। अनेक गीत, कहावतें, गाथाएं और किस्से अकाल की दास्तानों से भरे पड़े हैं। पानी की कीमत घी से भी महंगी होती है। एक गीत में कहा गया है- 'घीय ढुलै तो म्हारो कछु नहीं बिगड़ै, पाणीड़ो ढुळै तो जीव जाय रे।'

यहां का मानव बड़ा ही कर्मशील, कर्मठ और सदैव अपराजेय रहा है। कितनी ही मुसीबत आ पड़े किंतु कभी हार नहीं खाकर सदैव आशावादी बना रहता है। प्रकृति ने अकाल दिया तो उससे जूझने की शक्ति और तरीके, तौरतरीके और हल भी दिये हैं। कुछ अनाज ही ऐसे दिये हैं जो अकाल का सामना करने और उससे बचाये रखने के द्योतक हैं। इनके लिए न अधिक उपजाऊ भूमि, न खाद, न पानी की जरूरत रहती है। बीज पकने, फसल तैयार होने में भी अधिक समय नहीं लगता। उनका पौधा भी बड़ा नहीं होता। इन्हें चिड़िया तक नहीं खाती। अपेक्षाकृत कम मात्रा में खाने से भूख मिट जाती है और काफी समय बिना खाये रहा जा सकता है। आदमी तृप्त बना रहता है और प्यास भी कम लगती है। इसे पचाने में भी समय लगता है।

ऐसे अनाजों में कुरी, कोदरा, हमराई, बटी, माल मुख्य हैं। कवि नरोत्तमदास ने अपने सुदामा चरित्त में जिस कोदो सवां नामक अनाज का वर्णन किया है वही इधर कोदरा और समराई-हमराई के नाम से जाना जाता है। ये अनाज न सुलते हैं न सड़ते हैं। पचास से लेकर सौ वर्ष तक इनका कुछ नहीं बिगड़ता। इनकी जड़ें भी गहरी नहीं होतीं और जहां कहीं पहाड़ी-ढलान पर भी इनकी फसल ली जा सकती है बल्कि इनके बीजों का छिड़काव कर देने मात्र से भी ये अंकुरित हो उठते हैं।

ये अनाज चिकने या बहुत बारीक होते हैं। छिलकों पर छिलके और परत-दर-परत लिये होते हैं। आठ-आठ परत तक छिलकों की होती है। अन्य अनाजों की तुलना में ये आधे से कम खर्च में होते हैं। पशुओं को यह अनाज हजम नहीं होता है। आदिवासी क्षेत्र उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा के लोगों से पता चला कि कुछ घरों में आज भी यह अनाज काम में लिया जा रहा है।

इधर अकाल तो पड़ता ही रहता है पर दो अकाल अभी भी याद किये जा रहे हैं। पहला संवत् 1896 का तथा दूसरा संवत् 1956 का है। उदयपुर के गांवांचलों में आज भी इन अकालों की गूंज गीतों में अधिक गहराती सुनने को मिलती है। ऐसे समय में ये गीत फिर से अधिक गाये जा रहे हैं जबकि इधर भारी अकाल पड़ा हुआ है। कड़ावा है-

छनवा! थारे माथे बीजुरी जो पड़जो
बाजरा री बारे रोटी ने गवां री रोटी तेरा
जेठजी तो जीमण बैठा लूट्या तंबू डेरा

अर्थात् - हे छनवा! तुम्हारे ऊपर बीजली पड़े। बाजरे की बारह और गेहूं की तेरह रोटी बनाई। जेठजी जीमने बैठे तो रोटियों के साथ तंबू डेरे भी लूट ले गये।

छप्पन के अकाल का वर्णन तो कई रूपों में सुनने को मिलता है। एक गीत इस प्रकार है-

पड़ती सानो सपना रे / दुखिया राजा / नगरा खूटौ सारो रे / नदियां टूटा नीरा रे खांणा टूटा नीरा रे / लखमी मरवे लागी रे / धान खूटा कोठारा रे / खाई वे खूटी मक्की रे / दुनिया उठवा लागी रे।।

अर्थात् - हे राजा! छप्पन के साल घोर अकाल पड़ा। सारा नगर उजड़ गया है। नदी का पानी सूख गया है। महूड़े का खाना भी खत्म हो गया है। मवेशी मरने लगे हैं। कोठों में भरा धान खत्म हो गया है। मक्की भी खाते-खाते खत्म हो गई है। आदमी मरने लग गये हैं।

अकाल के गीतों के साथ वर्तमान हालात के सन्दर्भ भी स्वत: ही जुड़ते रहते हैं। यथा-

अन्दर जमी रूठी ने जंगल रूठिया
मंगर्‌या भाटा तपिया पंखी उजड्‌या
पाणी विन वाणी बंधरी वाछरू
ढांढा चोपाया जीणो छोड़ियो
हेंड़ांपंपा में पाणी सूखियो
कालो जो काल अकाल रो

अर्थात् - धरती जंगल सब रूठ गये हैं। मगरों के पत्थर तप रहे हैं। पक्षी उजड़ गये हैं। पानी के बिना बछड़ों की वाणी अवरूद्ध हो गई है। हेंडपंपों का पानी भी सूख गया है। चौपायों ने जीना छोड़ दिया है। अकाल का काल काला हुआ जा रहा है।

वर्षा की कमी होने के कारण राजस्थान में निरन्तर अकाल पड़ते रहे हैं। यह क्रम सदियों से जारी है। अकाल के सम्बन्ध में यह कहावत यहां के लोगों के मुख पर सुनने को मिल जाती है जिसमें प्रति तीसरे वर्ष आधा अकाल तथा आठवें वर्ष पूरा अकाल पड़ना कहा गया है- 'तीजो कुरियो आठमो काल।'

कहा जाता है कि ग्यारहवीं शताब्दी में एक ऐसा भीषण अकाल पड़ा जो लगातार बारह वर्ष तक चला तब पानी ही नहीं बरसा। तेरहवीं शताब्दी में सन् 48 तथा 92, पन्द्रहवीं शताब्दी में सन् 42, सौलहवीं शताब्दी में सन् 34-35 एवं 70, सत्रहवीं शताब्दी में सन् 51, 52, 53 व 60 तथा अठारवीं शताब्दी में सन् 53 तथा 68 एवं उन्नीसवीं शताब्दी में तो सन् 1900, 1901, 1905, 1908, 1917, 1925, 1934, 1948, 1952, 1965-66, 1987 वर्ष भयंकर अकाल के रहे। सन् 1900 तथा 1901 के अकाल की भयावह स्थिति में तो 10 लाख व्यक्ति काल कवलित हो गये।

अकाल की सबसे अधिक मार किसान झेलता है। उसके पास पूरी शताब्दी में पड़ने वाले अकाल का हिसाबी गणित है। प्रो. भंवरसिंह सामौर के अनुसार एक वर्ष में सात अकाल पड़ते हैं। मात्र 27 वर्ष ही अच्छी पैदावार देते हैं। 63 वर्ष ऐसे होते हैं जिनमें चार-छह माह तक का गुजारे लायक कामचलाऊ अनाज पैदा होता है। तीन ऐसे काल पड़ते हैं जिनकी भयावहता से घर के सदस्य तक बिछुड़ जाते हैं। कहावत है-

'सात काल सत्ताईस आछा, तरेसठ कुदरा काचा।
तीन काल देख्या नी जावै, पूत मिलै ना पाछा।।'

रेगिस्तानी इलाकों में वनस्पतियां तक मानव का पूर्ण सहयोग करती हैं। सादे दिनों में वे जहां एक फसल देती हैं वहां अकाल में दो फसल देती हैं। सांगरी-खोखा, पीलू-जालोटिया, कैर-ढालू, फोगला तृप्ति देते हैं तो लूंका, पत्ता, घिंटाल, लहासू पशुओं की भूख मिटाते हैं। वनस्पतियों के पत्ते पानी की पूर्ति भी करते हैं और छाया का सुख भी। एक लीटर पानी की पूर्ति के लिए जहां कोठा के चार लहासू पर्याप्त होते हैं वहां इतना ही पानी जाल के पांच पत्तों से प्राप्त किया जाता है।

अकाल या तो सुकाल होता है या दुकाल। दुकाल दुष्काल अकाल ही अधिक होता है। छपन्या के अकाल को यादकर लोग सिहर उठते हैं। इसीलिए हमारे यहां वर्षा के देव इन्द्र-अन्दरराजा और बीजली-बीजुराणी को भांति-भांति से मनाया जाता है। हलराया, दुलराया और झुलराया जाता है। आषाढ़ लगते ही बालिकाएं अपनी गुडियाएं छिपा देती हैं। स्वच्छ पानी से भरी साफ लुटियाको पंसेरी पर रख, उसके चहुंओर गोबर लगा दिया जाता है। पंसेरी से लुटिया चिपक जाती है तो वर्षा आने का सुखद समय मान लिया जाता है। कूकड़ी के कच्चे तारों में आटे के बने जलते दीपक झुलाये जाते हैं। यदि मन में धारी दिशा में दीपक झोले खाने लगते हैं तब भी बरसात का मेहमान होना समझ लिया जाता है।

लोकदेवताओं में मामादेव, खेड़ादेव, गोबर्‌यादेव की बड़े मान-मनुहार से पूजा की जाती है। हरदेव के कूकड़ी का तार लपेटी कड़ब की बनी नन्ही-सी मचली चढ़ाई जाती है। कुम्हार के घर जाकर चाक पूजन कर उसे उल्टा घुमाने का टोटका किया जाता है। बालिकाओं द्वारा कवेलू पर गोबर की मेंढकी बना घर-घर घुमाई जाती है। बच्चे नंगधड़ंग हो समूह रूप में मेहबाबा का आह्‌वान करते हुए मचल पड़ते हैं-

मेहबाबा आजा / घी रोटी खाजा
ढांकणी में ढोकळो / मेहबाबा मोकळो

इन्द्रदेव को राजी करने के लिए महिलाएं मिलकर मेंढ़क-मेंढ़की का विवाह रचाती हैं। जुदा-जुदा मटकियों में मेंढक-मेंढकी को अछन-अछन रखा जाकर विवाह की सारी विधियां पूर्ण करती हैं। दूल्हा बने मेंढक का नाम मेघराज और दुल्हिन बनी मेंढकी का नाम मछली रानी रखा जाता है। विवाह के बाद उन्हें समारोहपूर्वक एक नाले में छोड़कर विदाई दे दी जाती है।

इन्द्र इन्द्राणी से कुपित होने पर कई घरों में उन्हें दीवाल पर उल्टा गोबरा दिया जाता है। स्त्रियां निर्वस्त्र हो खेतों में हल चलाती हैं। दो स्त्रियां बैल बनकर जुड़ा खींचती हैं और एक हल की मूठ थाम चलती है। हल चलाती महिलाएं पानी के लिए करूण पुकार करती हैं तब पुरुष बनी महिला लोठे में पानी ले, उसके मुंह को साड़ी के पल्लू से ढक आती है जिसे अन्य औरतें उसका पीछा कर दूर तक भगाती हैं। इस परिहासात्मक स्वांग टोटके में स्त्री भूमि की तथा पुरुष बनी महिला इन्द्र प्रतीक है। अनाज, जल और वस्त्र विहीन होते लोक की दुर्दशा का यह नजारा और मनुष्य जाति का पशुवत आचरण इन्द्रदेव को दृष्टिगत कराने का रूदनमय प्रयास है। ऐसी मान्यता है कि इस कारूणिक परिदृश्य को देख इन्द्र-इन्द्राणी अवश्य पिघलेंगे और फूट-फूट कर रूदन रूप में ही सही, अश्रुधारा को छलकायेंगे ही।

पंखेरूओं के पंख ढीले पड़ गये हैं। बैल प्यासे हो गये हैं। अनाज के रूप में किसान ने अपनी घर की लक्ष्मी खेत में बीजोदी है। पानी हो तो वह लक्ष्मी हजार गुना होकर लौटे और सबकी भूख मेटे, प्यास बुझाये और छगन-मगन करे पर जब यह उपक्रम व्यर्थ हुआ लगता है तब वह कन्या जिसके केवल एक भाई हो, कीचड़-गोबर से भरा मिट्‌टी का घड़ा किसी के द्वार के बाहर पटक कर भाग जाती है और तब गृहस्वामिनी द्वारा गालियों की बौछार पड़ती है। इससे यह माना जाता है कि इन बौछारों की तरह ही पानी की बौछारें आनी वाली हैं। सच तो यह है कि काल किसी का, कभी ना बिगड़े। काल जब बिगड़ गया तो वह कंकाल बना देगा। जल की असली कीमत ही हमें तब समझ में आती है जब उसका अभाव होता है और जिसका अभाव होता है उसके भाव आसमान चढ़कर बोलते हैं। ऐसी स्थिति में जल से कई गुना अधिक महंगा घी भी व्यर्थ हुआ लगता है। लोकगीत की यह पंक्ति गवाह है जिसमें कहा गया है-

घीय ढुलै तो म्हारो कछु नहीं बिगड़ै / पाणीड़ो ढुलै तो जीव जावे रे / भर लावो पाणी सागर रो।

लेकिन जब-जब भी कठिन समय आया, अबखाई और मुसीबत का दौर आया, मनुष्य ने बड़े साहस, बहादुरी और हौंसले के साथ उसका मुकाबला किया है। प्रकृति और पर्यावरण ने भी उसके संघर्ष, संकट, विकट एवं भयावह परिस्थिति में साथ दिया है। अकाल से जूझने की ताकत और तौरतरीके भी दिये हैं। अनाज के ऐसे नन्हें-नन्हें बीज-कण दिये हैं जो क्रूर बने काल का मुकाबला कर सकते हैं। एक-एक कण तब मण-मण की उपज देकर मनुष्य के भाग्य को भस्म होने से बचाये रखता है।

कवि नरोत्तमदास के सुदामा चरित्र में कोदो सवां का वर्णन पहली बार कक्षा छह में पढ़ा था तब से इस अनाज को जानने की जिज्ञासा मेरे मन में थी। कोदो इधर कोदरा और सवां समराई-हमराई के नाम से जाना जाता है। यह अनाज न सुलता है न सड़ता है। पचास-पचास, सौ-सौ बरस तक इसका कुछ नहीं बिगड़ता। जड़ें भी इसकी गहरी नहीं पैठती। अत: पहाड़ी, ढलान पर भी इनकी फसल ली जा सकती है। बीज बोने की बजाय उसका छिड़काव कर देने मात्र से ये अंकुरित हो उठते हैं। नन्हें-नन्हें ये बीज चिकनाई लिए होते हैं। इसमें प्याज की तरह छिलके-दर-छिलके होते हैं जो आठ-आठ परत तक होते हैं। पशु इन्हें हजम नहीं कर सकते। आदिवासी क्षेत्रों में यह अनाज आज भी उपयोगी है।

प्रसिद्धि है कि महाराणा प्रताप जब अति कठिनाई के दौर में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे तब इन अनाजों की रोटी से ही अपने परिवार का पोषण किया। इसी सुनीसुनाई बात पर राजस्थानी के कविवर कन्हैयालाल सेठिया ने कविता लिख दी जो अति लोकप्रिय हुई-

'अरे घास री रोटी ही जद बन बिलावड़ो ले भाग्यो
नान्यो सो अमर्‌यो चीख पड़्यो राणा रो सोयो हिय जाग्यो'

एकबार जब सेठियाजी उदयपुर आये तब मैंने इस कविता का जिक्र करते उनसे कहा कि असलियत इससे कोसों दूर है तब उन्होंने कहा था कि कहीं यह बात सुनी थी सो कविता लिखदी।

इन अनाजों का पौधा घास जैसा ही होता है। पशुओं के खाने का चारा-घास अलग होता है। इस अनाज की रोटी मुलायम नहीं होकर ठोस, कुछ करड़ी और मोटी होती है जो प्याज, मिर्ची, भाजी के साथ बड़ी स्वादिष्ट लगती है।

अकाल से मुकाबला करने में जंगली कंद-मूल, फल-फूल भी बड़े सहायक रहे हैं। ऐसे-ऐसे जमीकंद मिलते हैं जिनके खाने से सप्ताह दो सप्ताह तक भूख नहीं लगती। महुआ तो आदिवासियों का प्राण रहा है। इस पेड़ की छाल से लेकर फल-फूल, लकड़ी सबकुछ बड़ी उपयोगी है। जंगल के विनाश ने जड़ीबूंटी और मूल्यवान सम्पदा से ही हमें वंचित नहीं किया, संस्कृति और जीवनचक्र से जुड़े विभिन्न रूपों से भी अलग-थलग कर दिया है।

बरसात नहीं होने पर जनजीवन बड़ा आकुल-व्याकुल और त्रस्त हो जाता तब गांव बलाई की ओर से पूरे गांव में डूंडी पिटवाई जाती। बलाई तब ढोल बजाता एलान करता कि संध्या को गांव के किसी सरोवर अथवा बागबगीची में समूह गोठ का आयोजन रखा गया है सो सबको शरीक होना है।

मुझे अच्छी तरह याद है, बचपन में कोई सात-आठ वर्ष का रहा होऊंगा, भयंकर अकाल पड़ा तो जाति वालों ने कमल वाले तालाब की परली पाल महासतियांजी में उजैणी के उपलक्ष्य में दाल-बाटी कर इन्द्रदेव को भोग लगाया था। जीमण जीमने के बाद इतनी जोर की बरसात हुई कि सब भीगते-भीगते घर पहुंचे।

इस अवसर पर महिलाएं इन्द्र राजा को बरसने के लिए बीजुराणी से अनुनय विनय करने के गीत भी गातीं। एक गीत जो अति लोकप्रिय था, उसकी शीर्ष पंक्ति थी-

'अन्दरजी ने मोकल ए म्हारी बीजुराणी देश में' अर्थात् ए मेरी बीजुरानी! इन्द्रराजा को मेरे देश में बरसने के लिए भेज। यह गीत संवादमूलक है जिसमें बीजुराणी कहती है कि इन्द्रराजा अभी गुजरात बरसने गये हैं। वहां से लौटकर आयेंगे तो भेज दूंगी और वह अपना वादा पूरा करती है।

वर्षा नहीं होने पर मामादेव, खेतरपाल तथा मामा भैरू की मनौती में मकई के सूखे डंठल से बनी मचली, छोटी खाट चढ़ाई जाती है। मक्का के सूखे पौधे जिन्हें राड़े कहते हैं के छिलके उतार भीतरी गुदा गर तथा छाल की सहायता से सवा बेंत के करीब आयताकार खटिया बनाई जाती है।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 जनवरी 2025

सम्पादकीय

राजा प्रजा का पात्र है

साल नया सबको मुबारक। साहित्य के रस में डूबे लेखक एवं पाठक इस साल खूब तरक्की करें, सफलता के नए शिखरों पर आरूढ़ होकर मानवता की सेवा की नई मिसालें पेश करें। वैचारिक मंथन सदैव निर्भीकता के साथ चलता रहे। साहित्य ने सदैव से राजसत्ता को समालोचनात्मक चुनौती दी है। जनता को दलित, असहाय और भीरू बनाने वाले राजतंत्र को जन के पक्ष में यदि किसी ने पछाड़ा है तो वह साहित्य ही है। सर्वोपरि रूप में हावी रहकर जो राजा तक को पछांटी देने में कामयाब रहा। इसके प्रमाणस्वरूप हरयुग के साहित्य में दमखम के साथ इतिहास के पन्ने भी मुखर होते हुए मिलते हैं।

राजसभा में भी कवियों ने मिलकर हुंकार ही भरी। विरुदावली गायक अलग थे जो राजा की प्रशंसा में विरुद गाते। ऐसे लोगों की अलग से कोटियां बनीं। राव भाट चारण सब एक मत के नहीं रहे। ऐसे भी हुए जिन्होंने राजा की प्रशंसा में लिखने को अपनी असहमति व्यक्त की। राजमद में चूर राजा को फटकार देने बिहारी ही आगे नहीं आये, चन्दबरदाई ने भी पृथ्वीराज की हेंकड़ी धवस्त कर दी थी। रासो के सम्पादन के समय साहित्य संस्थान में कविराव मोहनसिंह अपनी श्वेत दाढ़ी में हम लोगों द्वारा बनाये ऊंचे आसन पर बैठ अक्सर यह पंक्ति सुनाते, तब कविराज की आंखों की भौंहें उर्ध्वगामी हो जातीं और दाढ़ी के बाल पराक्रमी हो सैनिक की भांति मचलते लगते- 'गोरी रत्तड़ तुव धरा, तू गोरी अनुरक्त।' दो अर्थी इस पंक्ति को कविराज साक्षात् चन्दवरदाई से उन्मुक्त हो प्रभावपूर्ण मंचित कर कहते- ''आक्रामक मोहम्मद गौरी तुम्हारी धरती पर अपनी नजर गड़ाये अपने टकटकीपन में पोमा रहा है और आप राजन! अपनी गोरी, संयोगिता में नजर महरबान बने अनुरक्त हैं।''

भरी सभा में कह दिया सो कह दिया। सुना दिया सो सुना दिया। किसका, काहे का डर! कवि ही तो ट्रेक बदले राजा को ठिकाने लगायेगा। यह धारा मिटी नहीं है। पिटी नहीं है। इसकी सीटी गुम नहीं हुई है। दिनकर ने हुंकार भरी थी-'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।' राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने तो भारत भारती लिखकर स्वतंत्रता, स्वाधीनता और आजादी का जो माहौल बनाया वह स्वर्णाक्षरों में ही जड़ित हो गया। उन्होंने लिखा- 'राजा प्रजा का पात्र है, वह एक प्रतिनिधि मात्र है।' लोकतंत्र का राजा लोक द्वारा, जनता द्वारा चुना जाता है। वह प्रजा पालक, प्रजा हितैषी और प्रजा की उम्मीदों पर खरा उतरने वाला होना चाहिये। वह प्रजा का केवल पात्र और प्रतिनिधि मात्र है।'

यह महत्वपूर्ण, उल्लेखनीय और रेखांकित जोग लिखी है कि भारतीय स्वतंत्रता के बाद जनता का जो भी शासक आया वह पार्टी-प्रणेता रहा। नरेन्द्र मोदी के साथ यह पक्ष दृष्टिगत है कि वे भी प्रतिनिधित्व तो भाजपा का करते हैं मगर जनता ने उनकी व्यक्तिगत छवि के प्रभाव में आकर उन्हें ही नहीं, उनके साथ उनकी पार्टी को भी बारम्बार विजयश्री दिलाई है। इसीलिए मोदीजी भी जनता के बीच उस वैद्य की तरह हैं जो जन का चेहरा देखकर, जन की नाड़ी देखकर ही भांप जाते हैं कि हवा का, जन का, किसी संभावित रोग या कि बला का रुख किधर है।

ज्ञान के उपासकों को प्रोत्साहन जरूरी : ज्ञानमुनि

हैदराबाद (ह. सं.)। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ द्वारा 18 दिसंबर, बुधवार को हैदराबाद में जैनविद्या मनीषी डॉ. दिलीप धींग का सम्मान किया गया। आचार्य हस्ती शिष्य, श्रमणसंघीय संत ज्ञानमुनि के दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष नवरतनमल गुंदेचा ने डॉ. धींग का सम्मान किया। ज्ञानमुनि ने कहा कि डॉ. धींग श्रेष्ठ साहित्यकार हैं। समाज के गिने-चुने विद्वानों में इनकी गणना होती है। ये निष्पक्ष हैं। सर्वत्र इनका सम्मान होता है। इनके सम्मान से सम्मान का ही गौरव बढ़ता है। उन्होंने कहा कि जिस समाज में ज्ञान और ज्ञान के उपासकों का ध्यान रखा जाता है, वह समाज प्रगति करता है। करुणा इंटरनेशनल, तेलंगाना के अध्यक्ष श्रीपाल देशलहरा ने डॉ. धींग के साहित्यिक योगदान को प्रेरणादायक बताया। लोकेशमुनि ने डॉ. धींग के साहित्य को शोधपूर्ण व चिंतनपरक बताया। इस अवसर पर आचार्य आनंदऋषि साहित्य निधि के कार्यदर्शी सुरेश गुगलिया, सुनिल पालगोता, सीए गजेश अबानी भी उपस्थित थे।

'कैच द रेन' अभियान जन आंदोलन बना

उदयपुर (ह. सं.)। गत जुलाई को सूरत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वर्चुअल उपस्थिति में केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सीआर पाटिल, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी की उपस्थिति में वर्षा जल के संरक्षण हेतु जनभागीदारी से जल संचयन हेतु 'कैच द रेन' अभियान शुरू किया गया। अब यह अभियान देशभर में जन आंदोलन का रूप लेने लगा है। गत दिनों जयपुर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केंद्रीय जल संसाधन मंत्री सीआर पाटिल की इस अभियान को चलाने पर सराहना की। इस अवसर पर राजस्थान और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री उपस्थित थे। प्रधानमंत्री मोदी ने विश्वास जताया कि यह अभियान भविष्य में देश में भूजल की स्थिति में काफी बदलाव लाएगा। केंद्रीय जल संसाधन मंत्री ने संकेत दिया कि यह अभियान अब देशभर में जन आंदोलन का रूप ले चुका है।

शोध बनाम डॉ. गिरीशनाथ माथुर

– डॉ. जे. के. ओझा –

डॉ. गिरीशनाथ माथुर उदयपुर की गणेशघाटी जैसी उन्तुंग स्थान पर पले, पढ़े और बढ़े हुए तो हिरणमगरी जैसे मैदानी क्षेत्र गायत्री नगर में चले आये फिर भी वहां उनका आवास ऊंचाई पर ही है। यही स्थिति उनके जीवनकाल में भी रही थी। अभाव एवं कष्टों में रचे पचे गिरीशजी ने कभी आपा नहीं खोया और सदैव हिम्मत रखते हुए आगे बढ़ने की धुन में निरत रहे। गिरे, पड़े, उठे किन्तु कभी किसी से शिकवा नहीं किया। उम्र के पड़ाव की दृष्टि से वे मुझसे बड़े व आगे की कक्षा में पढ़ते हुए भी मित्र भाव व सखा स्नेह से रहे।

श्री डॉ. गिरीश नाथ माथुर

1972 ई. में उदयपुर से बीकानेर की शोध यात्रा एवं वहां की असहय कठिनाइयों ने हमें अंतरंग बना दिया और 'भाई साहब' का 'भाईपन' दोस्ती की गहनता में 'तू-तू' में बदल गई। हृदय की अकथनीयता परस्पर कथनियता में बदलने लगी और वे अपनी कोई भी बात मुझे कहने से नहीं चूकते थे।

ऐसा गिरीश वास्तव में आपने नाम के अनुरूप ही था। साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ में शोध सहायक के रूप में नौकरी करना उनके लिए आवश्यक हो गया था किन्तु 'राजस्थान में मराठा उपद्रव' विषय पर शोध करते हुए कहीं से भी, किसी भी तरीके से सामग्री मिले, लाने में, जाने में, एकत्र करने में एक पल का विलम्ब भी अरहय था। सीतामाऊ महाराजकुमार साहब जैसे विद्वान महान इतिहासज्ञ की पैनी दृष्टि भी 'गिरीश' को 'नाथ' बनाने में बड़ी सहायक रही थी। कोई पूर्व जन्मों का साथ ही समझें कि गिरीशनाथ, राजेन्द्रनाथ पुरोहित और मैं न केवल राजस्थान अपितु देश के किसी भी कोने से सेमीनार, कॉन्फ्रेंस का आग्रहपूर्वक बुलावा आता तो यह तिकड़ी नये-नये शीर्षक एवं नवीनतम शोध पत्रों के साथ वहां पहुंच जाती।

प्रिन्स वेल्स म्युजियम मुम्बई की एक सेमीनार में हम गये। तब प्रथम श्रेणी का टिकिट व आरक्षण का टिकिट लेकर उदयपुर से ट्रेन में बैठे किन्तु अहमदाबाद में ट्रेन की चूक हो जाने से आगे से आगे जो भी ट्रेन मिली उसके थर्ड क्लास के डिब्बे से यात्रा करते हुए पहुंचे। मलाल यह था कि शोध खोज भी धैर्य की इतनी परीक्षा लेती है क्या? परन्तु शोध पत्रों की प्रशंसा जब टाईम्स ऑफ इंडिया एवं देश के नामीगिरामी समाचार पत्रों में नामों सहित छपी तो हमारी पिछली सारी व्यवस्था धुल गई।

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी कॉलेज में जब डॉ. माथुर इतिहास के प्राध्यापक बने तो उन्हें लगा कि मैं अब अपने मनोनुकूल दिशा की ओर बढ़ रहा हूं। इस बीच अखबारों के लिए समाचार एकत्र कर लिखना व बड़े बाजार में बोलना भी उनकी लेखनी व वाक्शक्ति को तराश रही थी। फिर तो वे छात्र-छात्राओं को शोध कार्य भी कराने लगे और करीब 25 से अधिक शोधार्थियों को पीएच. डी. की डिग्री से लाभान्वित कराया। आश्चर्य तो यह है कि केवल इतिहास के क्षेत्र में ही नहीं अन्य विधा के छात्र-छात्राएं उनके पास शोध आदि की मदद के लिए आती तो वे उन्हें पूर्ण मनोयोग से सहायता प्रदान करते थे।

गिरीशजी के 125 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं तथा 'महाराणा कुम्भा' जैसे उच्चतम सम्मान से सम्मानित हुए हैं। उनकी समाजसेवा और राजनीति में भी पूर्ण रूचि रही। जनार्दनराय नागर डिम्ड टूबी विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार के पद को भी सफलतापूर्वक संचालित किया और रिटायर्ड होने से पूर्व प्रोफेसर का पद भी प्राप्त कर लिया था। इस भांति नीचे से ऊपर की यात्रा ने उन्हें कभी दम्भी नहीं बनाया और वे निरन्तर स्नेहशील, हसंमुख, मिलनसारी बन सभी को सहयोग देते रहे।

मैं उनके देवलोक गमन से पूर्व मिलने गया तो सोये-सोये लोगों के लिखे अध्यायों को देखते हुए अपने काले पेन से दुरूस्त कर रहे थे। तब स्थिति थोड़ी नाजुक लगी। मैंने उनसे आराम के लिए कहा तो बोले, 'यार अपना तो जीवन ही इसमें निकला है, किसी का भला होगा।' ऐसे गिरीशजी ने 22 दिसम्बर 2024 को प्रात: 7 बजे पारस हॉस्पिटल में अन्तिम श्वांस ली। 'गिरीश' शारीरिक रूप से तो नहीं हैं किन्तु उनकी सहयोग, सहानुभूति व सहृदयता की छवि सदैव अमिट रहेगी।

निष्पाप जीवण अर् सतत सिरजण रो पर्याय है ज्योतिपुंज : डॉ. देव कोठारी

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थानी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय और युगधारा: साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक मंच के संयुक्त तत्वावधान में सुविवि कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा के मार्गदर्शन में गोविंद गुरुजी की 165वीं जन्म जयंती के अवसर पर 'माटी री सौरम ज्योतिपुंज : जीवण अर् सिरजण' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित किया गया। युगधारा के संस्थापक डॉ. ज्योतिपुंजजी के संपूर्ण जीवन एवं कृतित्व को समर्पित यह आयोजन पंडित दीनदयाल उपाध्याय सभागार में हुआ।

उद्घाटन सत्र में आए सभी अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ सुरेश सालवी ने राजस्थानी भाषा के समकालीन वागड़ी साहित्य के भीष्म पितामह जयप्रकाश पंड्या 'ज्योतिपुंज' के बारे में अपने विचार रखे। युगधारा की अध्यक्ष किरण बाला 'किरन' ने 'सिरजण रौ पुण्य कर्म मिनख ने अमर कर देवे अर् साहित्य जनसमूह में सांस्कृतिक चेतना जागृत करे' कहते हुए युगधारा का परिचय दिया एवं उसके द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए भविष्य में इस संस्था के विकास की बात कही। अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. हेमंत द्विवेदी ने ज्योतिपुंजजी के साहित्य और उनके जीवन से जुड़े प्रसंगों को स्मृत करते हुए बताया कि नियमित ठहराव एवं शांति के ऋषिवर हैं ज्योतिपुंज। विशेष वक्ता ऋषभदेव के वरिष्ठ साहित्यकार उपेंद्र अणु ने ज्योतिपुंज का जीवन परिचय और जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों पर कहा कि ज्योतिपुंजजी का जीवन संघर्षों में रहते हुए भी साहित्य को पूर्ण समर्पित रहा। इनका जीवन और सृजन प्रेरणादायक है।

सारस्वत सान्निध्य प्रदान कर रहे ज्योतिपुंज ने अपने जीवन की अमूल्य घटनाओं और वागड़ी साहित्य के बारे में बताया और कहा कि हमारी मातृ भाषा ही हमारे संस्कारों की उचित संवाहक होती है। सत्र का संचालन डॉ लोकेश राठौड़ ने किया।

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभाग के अध्यक्ष जोधपुर के डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने डॉ. ज्योतिपुंजजी के राजस्थानी भाषा में महाकाव्य 'गोविंद गुरु नो चौपड़ो' के 18 शतकों के केंद्र विषय को विश्लेषित करते हुए इस ग्रन्थ को 'कर्मयोगी गोविंद गुरु रै कीरत रौ महाकाव्य' कहा। यह ग्रन्थ ज्योतिपुंज को आधुनिक राजस्थानी साहित्य का प्रथम महाकवि सिद्ध करता है। अध्यक्षता करते हुए नाथद्वारा के वरिष्ठ साहित्यकार माधव नागदा ने 'वागड़ लोकसंस्कृति के चितेरे कवि हैं ज्योतिपुंज' कहते हुए उनके हिंदी में रचित पद्य साहित्य के बारे में चर्चा की। विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ आलोचक प्रो. कुंदन माली ने इनके रचित हिंदी तथा राजस्थानी गद्य साहित्य पर आलोचना के माध्यम से महत्व बताया और उन्हें वागवर साहित्य का शाश्वत आलोक कहा। डूंगरपुर के वरिष्ठ साहित्यकार दिनेश पंचाल ने ज्योतिपुंज द्वारा रचित राजस्थानी पद्य साहित्य पर कहा कि 'वागड़ भाषा साहित्य के कल्पवृक्ष हैं ज्योतिपुंज।'

इसी सत्र में ज्योतिपुंजजी की सद्य प्रकाशित पोथी राजस्थानी की आलोचना कृति 'कूंत कातता सबद' का लोकार्पण किया गया एवं गोविंद गुरु नो चोपड़ो को भी सदन के समक्ष विधिवत्त रूप से लोक को समर्पित किया गया। संचालन युगधारा के पूर्व अध्यक्ष अशोक जैन 'मंथन' ने किया।

समापन सत्र के अध्यक्ष प्रो देव कोठारी ने 'निष्पाप जीवण अर् सतत सिरजण रो पर्याय है ज्योतिपुंज' कहते हुए राजस्थानी भाषा में वागड़ी में रचित साहित्य में ज्योतिपुंजजी के योगदान के बारे में बताया। मुख्य अतिथि विज्ञान महाविद्यालय के प्रो. कुंज बिहारी जोशी ने ज्योतिपुंजजी के रचनाकर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वागड़ी को स्वरूप में लाने का मूल कर्म आपने किया। विशिष्ट अतिथि शिवदान सिंह जोलावास ने ज्योतिपुंज के साहित्य को अनूठा बताया तथा मातृभाषा की महत्ता पर बात की। प्रकाश तातेड़ ने उन पर लिखी काव्य पंक्तियां वागड़ री माटी मायं, उपजे रतन अनेक, हीरे जैड़ा चमक रिया ज्योतिपुंजजी एक प्रस्तुत की और कहा कि जैसा इनका नाम है वैसे इनके गुण हैं। ज्योतिपुंजजी के सुपुत्र डॉ. विभूति पंड्या ने उनके जीवटता एवं अंतहीन सृजनशीलता के बारे में बताया। उनकी अर्द्धांगिनी मंजुला पंड्या उपस्थित थी। डॉ. निर्मल गर्ग ने 'लोगों को महान बनने की ओर अग्रसर करने वाले हैं ज्योतिपुंज' कहते हुए सभी को धन्यवाद प्रेषित किया। कार्यक्रम में युगधारा से नरोत्तम व्यास, पुष्कर गुप्तेश्वर, शैलेन्द्रसिंह सुधर्मा, लोकेश चौबीसा, पूनम भू, तरुण दाधीच, अनुश्री राठौड़, गोविंदसिंह, बनवारीलाल पारीक, श्रेणीदान चारण, सिम्मीसिंह, दीपा पंत, सूर्यप्रकाश सुहालका, गोविंदलाल शर्मा, शकुंतला सोनी, अरुण त्रिपाठी, कुसुम भारद्वाज, विनोद उपाध्याय, विपिन उपाध्याय, आकांक्षा, प्रियंका, बृजराजसिंह जगावत, रजनी शर्मा और विश्वविद्यालय से डॉ. हुसैनी बोहरा, शिक्षक, विद्यार्थी और शोधार्थी उपस्थित रहे।

राज्य मंत्रिमण्डल की बैठक में महत्वपूर्ण निर्णय
गहलोत राज में बने 9 जिले, 3 संभाग खत्म
राजस्थान में अब होंगे कुल 7 संभाग और 41 जिले

जयपुर (सुजस)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में शनिवार 28 दिंसबर को मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित मंत्रिमण्डल की बैठक में कर्मचारी कल्याण के साथ-साथ युवाओं के हित, प्रदेश में सुशासन और समग्र विकास सुनिश्चित करने के लिए प्रशासनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण फैसले किए गए।

संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने पत्रकार वार्ता में बताया कि कैबिनेट ने पिछली सरकार के समय में गठित जिलों और संभागों का पुन: निर्धारण किया है, जिसके बाद अब प्रदेश में कुल 7 संभाग और 41 जिले होंगे। संसदीय कार्य मंत्री ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार ने अपने कार्यकाल के आखिरी वर्ष में प्रदेश में 17 नवीन जिले एवं 3 नवीन संभाग बनाने का निर्णय लिया था, जिसके क्रम में राजस्व विभाग द्वारा दिनांक 5 अगस्त 2023 को अधिसूचना जारी कर जिलों व संभागों का सृजन किया गया था। तीन नए जिलों की घोषणा विधानसभा चुनाव 2023 की आचार संहिता से एक दिन पहले की गई, जिनकी अधिसूचना भी जारी नहीं हो सकी थी।

पटेल ने बताया कि पूर्ववर्ती सरकार ने नवीन जिलों एवं संभागों का गठन पूरी तरह से राजनीतिक लाभ लेने के लिए किया। इसमें वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता, प्रशासनिक आवश्यकता, कानून व्यवस्था, सांस्कृतिक सामंजस्य आदि किसी भी महत्वपूर्ण बिन्दु को ध्यान में नहीं रखा गया। नए जिलों के लिए पिछली सरकार ने कार्यालयों में न तो आवश्यक पद सृजित किए और न ही कार्यालय भवन बनवाए। बजट एवं अन्य सुविधायें भी उपलब्ध नहीं कराई गई। गत सरकार के इस अविवेकपूर्ण निर्णय की समीक्षा करने हेतु राज्य सरकार द्वारा एक मंत्रिमण्डलीय उप-समिति और इसके सहयोग के लिए सेवानिवृत्त आईएएस डॉ. ललित के. पंवार की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया। विशेषज्ञ समिति द्वारा नवगठित जिलों एवं संभागों के पुनर्निर्धारण के संबंध में तैयार की गई रिपोर्ट एवं सिफारिशें मंत्रिमण्डलीय उप समिति के समक्ष प्रस्तुत की गई। समिति द्वारा प्रस्तुत सिफारिशों पर विचार करते हुए नए सृजित जिलों में से 9 जिलों अनूपगढ़, दूदू, गंगापुरसिटी, जयपुर ग्रामीण, जोधपुर ग्रामीण, केकड़ी, नीम का थाना, सांचौर व शाहपुरा तथा नवसृजित 3 संभागों बांसवाड़ा, पाली, सीकर को नहीं रखने का निर्णय लिया गया है। आचार संहिता से ठीक पहले घोषित 3 नए जिलों मालपुरा, सुजानगढ़ और कुचामन सिटी को भी निरस्त करने का निर्णय राज्य मंत्रिमण्डल ने लिया है।

पोथीखाना

पुस्तक कुछ कहती है

- मधुर कुलश्रेष्ठ -

महान अर्थशास्त्री कौटिल्य के अनुसार, मनुष्याणां वृत्तिरर्थ:अर्थात अर्थ संपूर्ण मानवों का जीवन या उनकी वृत्ति है।

अर्थ के बिना जीवन संभव नहीं है या सरल शब्दों में कहा जाए कि जीवन में अर्थ का उतना ही महत्व है जितना जीवन के लिए साँसों का। इसी कारण से हमारे मनीषियों ने मानव कल्याण में अर्थ के महत्व को स्वीकारा है- 'धर्मार्थ काम मोक्षाणां आरोग्यं मूलमुतमम्।' अर्थ, धर्म, काम त्रिवर्ग कर्तव्यों के पूर्ण होने के पश्चात् मनुष्य को सद्गति एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। अन्य शब्दों में मनुष्य के द्वारा की जाने वाली त्रिवर्ग पुरुषार्थ क्रियाओं का प्रतिफल ही मोक्ष है।

हिंदू दर्शन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की अवधारणाएं संकीर्ण शाब्दिक अर्थों तक ही सीमित नहीं है वरन मानव जीवन में इनके वृहद् अर्थों व उद्देश्यों को संदर्भित करता है। यहाँ धर्म से आशय धार्मिकता व नैतिक मूल्य, अर्थ का मतलब समृद्धि तथा आर्थिक मूल्य, काम का अर्थ आनंद, प्रेम ल मनोवैज्ञानिक मूल्य और मोक्ष यानी मुक्ति, आध्यात्मिक मूल्य एवं आत्म-साक्षात्कार है अर्थात लौकिक एवं अलौकिक दोनों का समावेश है।

हमारे मनीषियों की तीक्ष्ण मेधा का अनुमान इस बात से स्वतः ही हो जाता है कि जिस अर्थ को विभिन्न विदेशी अर्थशास्त्रियों ने बहुत संकीर्ण नजरिए में परिभाषित किया है, उसी अर्थ को हमारे ऋषि-मुनियों ने विराट अर्थों में लघु सूत्रों में परिभाषित कर दिया था।

पुस्तक 'संत वाणी में अर्थ धारणा' के प्रथम अध्याय 'अर्थ-तत्व दर्शन' में विभिन्न विदेशी अर्थशास्त्रियों जे.बी.से., एफ.ए.वॉकर, जे.एस.मिल, मार्शल, कैनन, रॉबिंस आदि के द्वारा प्रतिपादित मतों का गहन अध्ययन और शोध डॉ. शोभासिंह ने करके निष्कर्ष निकाला है कि इन अर्थशास्त्रियों के मतानुसार अर्थ ही मानव जीवन का साध्य है। अर्थात इसकी महत्ता जीवन में भौतिकता की संकुचित सीमाओं तक ही निहित है।

वहीं इसी पुस्तक के दूसरे अध्याय 'प्राचीन वाड्मय में अर्थ तत्व' में अर्थ के संबंध में भारतीय चिंतन को विस्तृत रूप से वर्णित किया है। भारतीय दर्शन में अर्थ की महत्ता मानव जीवन की भौतिकता एवं अभौतिकता दोनों में है।

प्राचीन मनीषी अर्थ के साध्य के साथ अर्थोपार्जन के साधनों पर भी जोर देते हैं। उनके अनुसार 'शरीरमाद्यम् खलु धर्म साधनम्' जीविकोपार्जन के लिए न्यूनतम धन आवश्यक है किंतु 'अन्यायोपार्जितं वित्तं दशवर्षाणि तिष्ठति' अन्याय से उपार्जित धन नष्ट हो जाता है। डॉ. शोभासिंह ने वेदों, पुराणों, उपनिषदों, स्मृतियों, बाल्मीकि रामायण एवं शुक्राचार्य, विदुर चाणक्य नीतियों तथा जैन बौद्ध मतालंबों का शोधात्मक विश्लेषण इस अध्याय में किया है। यह भारतीय चिंतन ही है जो मानव कल्याण की सर्वोपरि भावना से ओतप्रोत है।

तृतीय अध्याय से लेकर पन्द्रहवें अध्याय तक भक्तिकालीन संतों तुलसी, कबीर, सूर, जायसी रामानंद, अग्रदास,नाभादास, कुम्भनदास, रैदास, मीराबाई, रसखान, दादी-नानी शेखफरीद के साहित्य में प्रतिपादित अर्थ चिंतन, धारणा व आर्थिक विमर्शों का सारगर्भित

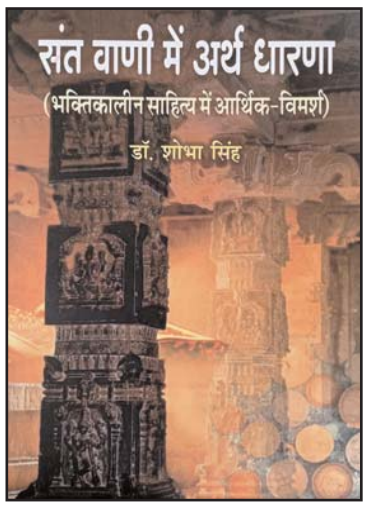

अन्वेषणात्मक अध्ययन समाहित है।

अपनी अलौकिक कृति रामचरितमानस के द्वारा निर्जीव व शोषित समाज की जन चेतना को जगाने वाले गोस्वामी तुलसीदास जी भी अर्थ की महत्ता स्वीकारते हुए कहते हैं 'आर्थिक स्वाधीनता के बिना शेष सभी अधिकारों का कोई विशेष महत्व नहीं है।' (पृष्ठ 80)

कवितावली में तुलसीदास जी कहते हैं -

'दम-दुर्गम, दान दया, मकर्म, सुधर्म, अधीन सबै धन को।

तप, तीरथ, साधन, जोग, विराग सों होई, नहीं दृढ़ता तन को॥' (पृष्ठ 81)

तुलसी के अर्थ चिंतन को आधुनिक काल के विद्वानों कार्ल मार्क्स, वेपर, फ्रेडरिक हीगल की विचारधाराओं के साथ डॉ शोभा सिंह जी के तुलनात्मक अध्ययन से विदित होता है कि तुलसी का अर्थ चिंतन समृद्धिमूलक है। राज्य व प्रजा मिलकर कल्याणकारी समाज की स्थापना कर सकते हैं। आध्यात्मिक, धार्मिक और यथार्थदृष्टा तुलसीदास जी सारे समाज तंत्र का आधार 'पेट अर्थात आर्थिक शक्ति' को मानते हैं। (पृष्ठ 84)

कबीर निर्गुण भक्ति परंपरा के ऐसे संत हैं जिन्होंने समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों व आडंबरों पर अपनी साखियों के द्वारा तीव्र प्रहार किए हैं। यद्यपि वे अर्थशास्त्री नहीं थे किंतु उनका अर्थ चिंतन आधुनिक अर्थशास्त्रियों से ज्यादा यथार्थपरक है। उनके अनुसार वर्ग संघर्ष का मुख्य कारण आर्थिक विषमता, धर्म विविधता, वर्ण भेद, वर्ग भेद है। (पृष्ठ 130)

सूरदास, रैदास व जायसी लोक परंपरा,लोक जीवन के संत रहे हैं। इनके द्वारा रचित साहित्य में अर्थ को जीवन के लिए आवश्यक तो माना गया है किंतु इसके अपरिग्रह पर जोर दिया गया है।

जायसी के अनुसार 'मानव जीवन में धन कोई नगरवधू है। जिसका सानिध्य उचित है पर उस पर पूर्ण अनुरक्ति उचित नहीं है।' जायसी का अर्थ चिंतन है -

'बड़ेन जौं न सैंत औ गाड़ा। देखा भार चूँबि के छाड़ा'। (पृष्ठ 165)

सूरदास ने अपने साहित्य में आदर्श समाज व्यवस्था का चित्रण किया है जहाँ श्रम पर सबका बराबर अधिकार है। (पृष्ठ 242)

रैदास ने आदर्श गांव बेगमपुर की परिकल्पना करते हुए समतामूलक, वर्ग विहीन समाज की अवधारणा दी है। (पृष्ठ 293)

इसी तरह भक्तिकालीन समाज के अन्य संतों, विचारकों मीराबाई, दादू, नाभादास, ईश्वरदास तथा शेख फरीद का चिंतन जन कल्याण, लोक कल्याण का रहा है। इन सभी के साहित्य का मूल तत्व अर्थ, धर्म, काम के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति करना ही है।

'संत वाणी में अर्थ धारणा' में अर्थ प्रबंधन के साथ-साथ व्यक्ति, समाज और प्रकृति पर गहन विचार, विश्लेषण किया गया है। डॉ शोभा सिंह लिखती हैं- 'जिस प्रकार भारतीय आध्यात्मिक चिंतन जीवात्मा, परमात्मा और प्रकृति के त्रेतवाद पर आधारित है उसी प्रकार भारतीय अर्थ चिंतन भी मनुष्य, समाज और प्रकृति के त्रेतवाद पर आधारित है।'

126 संदर्भ ग्रंथों की सूची देखकर अनुमान लगाया जा सकता है कि विदुषी डॉ शोभा सिंह द्वारा इस पुस्तक को रचने में कितना गहन शोध, अनुसंधान तथा श्रमसाध्य कार्य किया है। विद्वतापूर्ण भाषा व शैली में रचित पुस्तक 'संत वाणी में अर्थ धारणा' पाठकों से भी ध्यानमग्न होकर पढ़ने की माँग करती है अन्यथा वे पुस्तक के चिंतन की गहराई का आनंद उठाने में कामयाब नहीं हो पाएंगे। पुस्तक शोधार्थियों के लिए बहुत उपयोगी हो सकती है।

प्राचीन भारतीय स्थापत्य शैली के स्तंभों से सज्जित पुस्तक आवरण विषयानुकूल है। प्रूफ रीडिंग और मुद्रण बहुत उत्कृष्ट है। पुस्तक में मात्र दो जगह मात्रिक त्रुटि नजरअंदाज किए जाने योग्य है।

अपने जीवन में भी संत परंपरा का निर्वाह करने वाली विदुषी शोभा जी को उत्कृष्ट कृति के लिए बधाई।

पुस्तक संत वाणी में अर्थ धारणा (भक्ति कालीन साहित्य में आर्थिक-विमर्श), लेखिका डॉ. शोभासिंह, आर्यावर्त संस्कृति संस्थान दिल्ली से प्रकाशित 750 रूपये मूल्य की है।

आत्म-मंथन

-डॉ प्रिया सूफ़ी -

फिर दिसंबर जाने को है फिर जनवरी आने को है। वक्त की सूरत बदलाव चाहती है। पर क्या हम बदल रहे हैं? साल का कैलेंडर बदलते वक्त कभी सोचा कि खुद को बदलना भी जरूरी होता है। कितनी ही आदतें, बातें, व्यवहार गलत भी होते हैं हमारे भीतर। पर हम उन्हें यूं ही रहने देते हैं। कभी बदलने के बारे में सोचते भी नहीं।

यह मानव प्रकृति है कि थोड़ा सा जाएं हासिल कर के, थोड़ी सी धन -संपत्ति का मालिक बन कर वह स्वयं को खुदा से भी बड़ा समझने लगता है। अपने गलत कामों के लिए भी परमात्मा को ज़िम्मेदार मानने लगता है। पता नहीं क्यों हम इंसान यह नहीं समझते कि यह संसार उसी परम पिता परमात्मा की मर्जी से चलता है। उसकी मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। फिर भी हम अपने कर्मों पर ध्यान नहीं देते। बुरा से बुरा कर्म करने से पहले पल भर को नहीं सोचते। हम क्यों भूल जाते हैं कि अंतत: हमारे अपने कर्म ही हैं जो हमें स्वर्ग या नरक तक पहुंचाएंगे।

अभी कुछ दिन पहले एक कहानी पढ़ी थी। कहते हैं आज़ादी से पहले कराची से एक ट्रेन चलती थी जो मुंबई तक जाती थी। जिसे उस समय सुपर फास्ट माना जाता था। उसमें एक सेठ का परिवार सफ़र कर रहा था। जब गाड़ी पूरे वेग पर थी तो उसमें पता नहीं कहां से एक पठान पिस्तौल और चाकुओं से लैस दाखिल हुआ। वह उस सेठ के पास आया और चाकू दिखा कर गहने मांगने लगा। इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता उसने सेठानी का गहनों से भरा डिब्बा लिया और गाड़ी से बाहर फेंक दिया। तभी उसे सेठानी की गोद में पड़े दुधमुंहे बच्चे के गले में सोने का कंठ हार दिखा। उसने हार के लालच में बच्चा उठा कर गाड़ी से बाहर फेंक दिया। सेठ और सेठानी की चीखें जब तक निकली तब तक वह पठान भी तेज रफ्तार गाड़ी से बाहर कूद गया। सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि हर कोई हतप्रभ रह गया। आखिर गाड़ी रुकवाई गई। पीछे के जाकर देखा गया तो पठान बदकिस्मती से गाड़ी से कूदते वक्त रेलवे लाइन के साथ लगते खंभे से टकरा कर लहूलुहान वहीं मृत पड़ा मिला। सेठानी के गहनों का डिब्बा भी टेढ़ा सा हो कर वहीं घास में पड़ा मिला। परंतु नन्हें बालक का कोई अता पता नहीं था। वैसे भी अंधेरी रात में कुछ मिलना असंभव सा था। गाड़ी को आगे पीछे कर के कई बार देखा खोजा गया। पर बच्चा नहीं मिला। लोगों ने मान लिया कि इस सुनसान अंधेरे में कोई जानवर बच्चे को उठा ले गया है। माता पिता रोते - पीटते रहे और जाने के अतिरिक्त उनके पास कोई चारा नहीं था।

उसी रोज़ सुबह के वक्त कोई व्यक्ति रेलवे लाइन पर हल्का होने आया तो उसे अहसास हुआ कि कोई प्राणी यहां सांस ले रहा है। थोड़ा खोजा तो एक कांटों भरी झाड़ी के एक कांटे में बालक की मां द्वारा पहनाए लंगोट का सेफ्टी पिन अटका था और लंगोट का झूला सा बन गया था। बालक झूले में आराम से अंगूठा चूस रहा था। वह व्यक्ति आसपास के सुनसान को देखता तो कभी बालक को। परमात्मा की ताकत के समक्ष उसने सिर झुका दिया। जो सोए हुए पाखियों को पेड़ से गिरने नहीं देता वही इस संसार को चलने वाला है, वही मारने वाला और बचाने वाला भी वही है। उसी दिन उसी वक्त से वह व्यक्ति संसार त्याग संन्यासी हो गया।

सच तो यह है कि हमारे भीतर बदलने की इच्छा और समझने की ताकत देने वाला भी वही तो है। चलिए इस नए वर्ष की शुरुआत उसी असीम शक्ति के समक्ष अपनी ससीम सी ईहा को रखें और बस इतना ही मांगे कि समझने की, बदलने की शक्ति देना। आगे बढ़ने की वजह के साथ पैरों को ताकत भी देना। नए साल की शुभकामनाएं।

स्वतंत्रता सेनानी रामचन्द्र नन्दवाना स्मृति सम्मान समारोह में 3 लेखक सम्मानित

चित्तौड़गढ़ (ह. सं.)। विरासत का गर्व करना अच्छी बात है, किंतु विरासत के संदेश को व्यापक बनाना और उसे सामाजिक- सांस्कृतिक चेतना से जोड़ना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। संभावना संस्थान ने मेवाड़ के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी रामचन्द्र

नन्दवाना की स्मृतियों को सहेजने का जैसा अनुष्ठान किया है, वह अनुकरणीय है। यह बात लेखक और निबंधकार डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने स्वतंत्रता सेनानी रामचन्द्र नन्दवाना स्मृति सम्मान समारोह में कही। कार्यक्रम में उन्होंने प्रो. अवधेश प्रधान, प्रताप गोपेन्द्र व सोपान जोशी को सम्मानित किया।

इस अवसर पर वर्ष 2022 के लिए सोपान जोशी की कृति 'जल थल मल', 2023 के लिए अवधेश प्रधान की कृति 'सीता की खोज' और 2024 के लिए प्रताप गोपेन्द्र की कृति 'चंद्रशेखर आजाद : मिथक बनाम यथार्थ' को सम्मानित किया गया। डॉ. अग्रवाल, हिन्दुस्तान जिंक मजदूर संघ के महामंत्री घनश्यामसिंह राणावत, प्रो. माधव हाड़ा ने लेखकों को शॉल, प्रशस्ति पत्र और राशि भेंट की। संभावना संस्थान के अध्यक्ष लक्ष्मण व्यास ने बताया कि नन्दवाना शताब्दी वर्ष 2019 से प्रारंभ हुए इस सम्मान के लिए अब तक कुल छह लेखकों की कृतियों को चुना गया है।

इस दौरान पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के आकस्मिक निधन पर दो मिनिट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। संभावना के सदस्य डॉ. गोपाल जाट को कॉलेज शिक्षा में चयनित होने पर डॉ. ए. एल. जैन एवं प्रो. सुरेशचंद्र राजोरा ने शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। समारोह में के. एम. भंडारी, डॉ सत्यनारायण व्यास, डॉ. के. एस. कंग, डॉ. भगवान साहू, मुन्नालाल डाकोत, डॉ. गोविंदराम शर्मा, जी. एन. एस. चौहान, श्रमिक नेता सत्येंद्रकुमार मोड़, राष्ट्रीय कवि अब्दुल जब्बार, अनिल जोशी, गुरविंदर सिंह, सुभाषचंद्र नन्दवाना, मनोज जोशी, जे. पी. भटनागर, नंदकिशोर निर्झर, कवि भरत व्यास, संतोषकुमार शर्मा, सीमा पारीक, घनश्यामसिंह चौहान, किरण सेठी, विकास अग्रवाल, बाबूलाल कच्छावा सहित बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी उपस्थित थे। संयोजन डॉ. कनक जैन ने किया जबकि डॉ. पल्लव ने आभार प्रदर्शित किया।

समाचार / विचार

किरण नागौरी जिला संयोजक नियुक्त

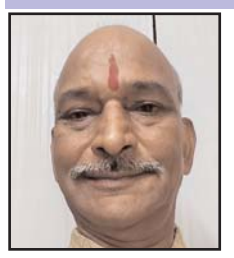

उदयपुर (ह. सं.)। भारतीय जनता पार्टी इस वर्ष स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस के सौ वर्ष पूरे होने पर 25 दिसंबर 2024 से 25 दिसंबर 2025 तक जन्म शताब्दी वर्ष मनायेगी। देहात जिलाध्यक्ष चन्द्रगुप्तसिंह ने बताया कि जो कार्यक्रम वर्ष पर्यंत चलेंगे, उसका जिला संयोजक किरण कुमार नागौरी को नियुक्त किया गया है। इसके अलावा भरत भानु सिंह देवड़ा (मावली), भगवतीलाल सेवक (सलूंबर), बाबूलाल सुथार (गोगुन्दा) तथा अमृतलाल बाहेड़ी (खेरवाड़ा) को आयोजन समिति सदस्य नियुक्त बनाया गया है जिनके सान्निध्य में वर्ष भर स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म शताब्दी वर्ष के आयोजन होंगे।

हिन्द ज़िंक को मिले 11 पुरस्कार

उदयपुर (ह. सं.)। हिन्दुस्तान ज़िंक लि. ने भारत कोकिंग कोल लि., धनबाद में आयोजित 53वीं अखिल भारतीय खान बचाव प्रतियोगिता में 11 प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किये। खान सुरक्षा महानिदेशालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में देश की 32 टीमों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम खान बचाव सेवाओं के निदेशक श्याम मिश्रा एवं अंतर्राष्ट्रीय खान बचाव निकाय के सचिव एलेक्स सहित प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में आयोजित हुआ। हिन्दुस्तान ज़िंक की रामपुरा आगुचा खदान की पुरुष टीम ने ओवरऑल मेटल माइंस श्रेणी में शीर्ष स्थान हासिल किया। ज़िंक की रामपुरा आगुचा क्लस्टर की दूसरी महिला बचाव टीम ने दूसरा स्थान हासिल किया। इससे पहले, पहली महिला टीम ने प्रतियोगिता के 52वें संस्करण में शीर्ष स्थान हासिल किया था प्रतिभागियों का कई चुनौतीपूर्ण कार्यों पर परीक्षण किया गया, जिसमें सैद्धांतिक आकलन, प्राथमिक चिकित्सा, वैधानिक प्रक्रियाएं और खदान बचाव और पुनर्प्राप्ति संचालन शामिल थे। हिन्दुस्तान ज़िंक की टीमों ने लचीलापन, तकनीकी विशेषज्ञता और सरलताका प्रदर्शन किया, और अपने असाधारण प्रदर्शन के लिए डीजीएमएस अधिकारियों और उद्योग के दिग्गजों से उच्च प्रशंसा अर्जित की।

स्विगी के साथ 2024 में उदयपुर ने मनाया हर बाइट का जश्न

उदयपुर। झीलों के शहर उदयपुर में 2024 में स्विगी खाने के शौकीन लोगों के लिए भरोसेमंद साथी बनकर सामने आया। इसके माध्यम से पिछोला झील और बापू बाजार के चहल-पहल भरे इलाकों से पसंदीदा खाने को डिलीवर किया जाता है। बात चाहे किसी शाही दावत की हो या झटपट नाश्ते की, स्विगी ने लोगों के पसंदीदा खाने को उनके घर तक पहुंचाया।

स्विगी फूड मार्केटप्लेस के चीफ बिजनेस ऑफिसर सिद्धार्थ भाकू ने कहा कि सुंदर नजारों वाले शहर में लोगों की पहली पसंद पनीर ग्रेवी और वेज पिज्जा है। इस पर्यटन केंद्र में लोग अपने दिन की शुरुआत आलू परांठों पर मक्खन लगाकर और उसके बाद बटरी इडली खाकर करना पसंद करते हैं। उदयपुर का सबसे पसंदीदा स्नैक गार्लिक ब्रेड है। इसमें भी कॉर्न गार्लिक ब्रेड को सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। इसके बाद पनीर, चिकन और मटन गार्लिक ब्रेड ने लोगों के दिलों में जगह बनाई है। पिज्जा भी धीरे-धीरे जगह बना रहा है। एक यूजर ने ट्रिपल चिकन फीस्ट, वेजी सुप्रीम, ऑसम अमेरिकन चीजी चिकन, कंट्री फीस्ट, तंदूरी पनीर, ढाबे दा कीमा पिज्जा पर 15,524 रुपये खर्च किए। दिवाली और दुर्गा पूजा के दौरान उदयपुर में लोगों ने मिल्क केक और काजू पिस्ता बर्फी का आनंद उठाया। आईपीएल के दौरान एक यूजर ने एक ही ऑर्डर में 40 आलू बर्गर ऑर्डर कर दिए। स्विगी डाइनआउट के माध्यम से 1.8 लाख से ज्यादा लोगों ने बुकिंग की। डाइनर्स ने इसकी मदद से 4 करोड़ रुपये से ज्यादा की बचत की।

पिम्स हॉस्पिटल और 185 सैन्य अस्पताल के बीच एमओयू

उदयपुर (ह. सं.)। काफी समय से पिम्स अस्पताल अपने देश के वीर सैनिकों व उनके परिवार का बखूबी इलाज कर रहा है जिसके तहत 185 सैन्य अस्पताल और पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पिम्स अस्पताल) उमरड़ा उदयपुर के बीच एमओयू साइन हुआ। एमओयू पर पिम्स अस्पताल के चेयरमैन अशीष अग्रवाल, नमन अग्रवाल मैनेजिंग डायरेक्टर व मेडिकल डायरेक्ट डॉ. कमलेश के. शेखावत और 185 सैन्य अस्पताल के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल मुकुल गुप्ता ने हस्ताक्षर किए। समझौते का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक आपदाओं, मानव निर्मित संकटों और युद्ध के समय स्वास्थ्य सेवा संसाधनों को साझा करना है। इससे आपातकालीन स्थिति में भारतीय सेना की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकेगा। एमओयू साइन के दौरान डॉ. देवेन्द्र जैन रजिस्ट्रार, प्रोफेसर डॉ. प्रशांत नाहर प्रेसिडेंट, प्रतीक अग्रवाल, कैप्टन नवीन यादव, जयप्रकाश त्यागी, अनुराग जीनगर आदि मौजूद रहे। आर्मी और पिम्स के बीच कॉर्डिनेशन का कार्य जयप्रकाश त्यागी रेडियोलॉजी इंचार्ज ने किया। पिम्स अस्पताल के चेयरमैन अशीष अग्रवाल, चेयरपर्सन श्रीमती शीतल अग्रवाल, नमन अग्रवाल मैनेजिंग डायरेक्टर ने कहा कि ये हमारे अस्पताल के लिए बहुत गर्व की बात है कि हमारा अस्पताल आपदा में अपने देश के वीर सैनिकों के काम आ सके।

अंतर्राष्ट्रीय लग्जरी वेलनेस मैग्जीन में उदयपुर के सेंटर पर कवर स्टोरी

छह महीने में अंतर्राष्टीय एयरपोर्ट की सुविधा मिलते ही ग्रामीण क्षेत्र में सीधे कनेक्टिविटी हो जाएगी : कटारिया

उदयपुर (ह. सं.)। पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि उदयपुर ग्रामीण क्षेत्र में खुले वेलनेस सेंटर पर देश ही नहीं दुनिया के लोग आ रहे हैं यह उदयपुर के लिए बड़ी बात है। कटारिया बाठरड़ा कला में राजस्थान के पहले नेचर थैरेपी 'राजबाग हॉलिस्टिक वेलनेस सेंटर' को बैंगलोर से प्रकाशित अंतर्राष्ट्रीय स्तर की वेलनेस मैग्जीन में जगह मिलने पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

कटारिया ने कहा कि आने वाले छह महीने में अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट की सुविधा भी मिल जाएगी तो इस ग्रामीण क्षेत्र में सीधे कनेक्टिविटी भी हो जाएगी। उन्होंने कहा कि विदेश से कोई यहां आकर 15 दिन रुकता है तो निश्चित रूप से इस क्षेत्र का विकास होगा। इसे जिस कल्पना से बनाया वह कल्पना आज साकार होती दिखी है। दुनिया में इस सेंटर से उदयपुर का नाम देश ही नहीं दुनिया तक पहंचेगा। कटारिया ने कहा कि संतश्री अवधेशानंदजी महाराज जहां-जहां तपस्या करते है वह जगह पवित्र हो जाती है।

समारोह में वेलनेस मैग्जीन तथा राजबाग हॉलिस्टिक वेलनेस सेंटर के ब्रांड की लॉन्चिंग सूरजकुंड के संतश्री अवधेशानंदजी महाराज और पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने की। चेयरमैन राजेन्द्र नलवाया ने स्वागत किया। इस अवसर पर वल्लभनगर विधायक उदयलाल डांगी, श्यामसुंदर नलवाया, वीरेन्द्र नलवाया, अतुल चंडालिया, हिम्मतसिंह चौहान, जितेन्द्रसिंह राठौड़, अनंतसिंह राठौड़, राकेश सुहालका, रूपेश मेहता, विनोद दलाल, भूपेन्द्र बाबेल, राघवेन्द्रसिंह राठौड़, विनयदीपसिंह कुशवाह सहित बाठेड़ाकलां के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

चेयरमैन राजेन्द्र नलवाया व वाइस चेयरमैन योगेश कुमार ने बताया कि डॉ. श्याम नदुगले व उनकी टीम की देखरेख में राजबाग होलिस्टिक वेलनेस सेंटर पर नॉन क्यूरेटिव व क्यूरेटिव बीमारियों का उपचार किया जा रहा है। यह वेलनेस सेंटर राजस्थान में अपनी तरह का पहला व अनूठा सेंटर है।

इसका संचालन ट्रांस होटल एंड सिसोर्ट्स के माध्यम से हो रहा है। व्यक्ति प्राकृतिक जीवनशैली अपनाते हुए प्राकृतिक औषधियों व विशेषज्ञ चिकित्सकों की मदद से किसी भी प्रकार की बीमारी में अधिकतम अच्छे परिणाम हासिल कर सकता है। नेचुरापेथी, योगा, आयुर्वेद, फिजियोथेरेपी, ट्रेडिशनल चाइनीज मेडिसिन जैसे एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर, कपलिंग थैरेपी, म्यूजिक थेरेपी आदि के माध्यम से यहां उपचार किया जा रहा है।

लोग केवल इस थेरेपी को एक्सपीरियंस करना चाहते हैं। वे तीन दिन के लिए तथा जो किसी भी प्रकार की थेरेपी लेना चाहते हैं वे 10 से 15 दिन जैसा भी चिकित्सक सलाह हो, उसके अनुसार यहां रह कर उपचार पाते हैं।

यहां 33 बीघा में 20 कॉटेज की फेसिलिटी है, 40 गेस्ट रह सकते हैं। भविष्य में 60 कॉटेज तक की फेसिलिटी विकसित की जाएगी।

राजस्थान के पहले नेचर थैरेपी राजबाग हॉलिस्टिक वेलनेस सेंटर में सबसे पहले यहां आने वालों की बीएमआई मशीन से 40 पेज की रिपोर्ट निकाली जाती है ताकि पता चल सके कि किस तरह की थैरेपी देनी है, कौनसा फूड देना है। यहां के रेस्टोरेंट में हर व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत मैन्यू तय है जो उनकी जरूरतों व बॉडी की रिक्वायरमेंट के अनुसार है।

योगा, मेडिटेशन सेंटर, पिरामिड मेडिटेशन, लेवरेंथ गार्डन आदि सब कुछ उपलब्ध हैं। यहां आने वाला किसी भी प्रकार का नशा नहीं कर सकता, मोबाइल की परमिशन भी सीमित व बहुत जरूरी होने पर ही है। बीमार लाइफ स्टाइल के कारण होते हैं। यहां पर लाइफ स्टाइल में बदलाव के साथ ही अन्य सहायक थैरेपी की मदद से हीलिंग किया जाता है जो बहुत ही कारगर साबित हो रहा है। कॉस्मिक एनर्जी, जियो एनर्जी हीलिंग भी होती है।

एचडीएफसी बैंक और आरआईएसएल में समझौता

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने घोषणा की कि वह राजस्थान सरकार के ईमित्र प्लेटफॉर्म के माध्यम से राज्य में अपने उत्पादों और सेवाओं की विस्तृत श्रृंखला की पेशकश करेगा। राजस्थान सरकार की पूर्ण स्वामित्व वाली कम्पनी राजकॉम्प इंफो सर्विसेज लि. (आरआईएसएल) के साथ साझेदारी में, बैंक का लक्ष्य राज्य के कम और बिना बैंकिंग वाले क्षेत्रों में पकड़ बनाने के लिए ई-मित्र एजेंट नेटवर्क का लाभ उठाना है।

आरआईएसएल और एचडीएफसी बैंक के बीच हुए समझौते के तहत, बैंक के स्मार्ट साथी डिजिटल वितरण प्लेटफॉर्म को ई-मित्र ऐप के साथ शामिल किया जाएगा, जिससे राजस्थान के लोग बैंक के 40 से अधिक उत्पादों और सेवाएं डिजिटल रूप से प्राप्त कर सकेंगे। ईमित्र का 78,000 मजबूत एजेन्ट नेटवर्क मार्गदर्शन करने के लिए उपलब्ध होगा।

एचडीएफसी बैंक के कंट्री हेड (पेमेंन्ट, लायबिलिटी प्रोडेक्ट, कंज्यूमर फायनेंस) पराग राव ने कहा कि हमें राजस्थान सरकार के साथ साझेदारी करके खुशी हो रही है। आरआईएसएल के टेक्नीकल डायरेक्टर रामेश्वरलाल सोलंकी ने कहा कि आरआईएसएल के तत्वावधान में क्रियान्वित राजस्थान राज्य सरकार की प्रतिष्ठित फ्लैगशिप परियोजना ईमित्र ने एचडीएफसी बैंक के साथ एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। यह पहल ई-मित्र नेटवर्क के माध्यम से राज्य के नागरिकों को सेवाओं की डिलीवरी में वृद्धि करेगी।

राजस्थान में उन्नत 3डी इमेजिंग और नेविगेशन की शुरुआत

उदयपुर (ह. सं.)। पीठ दर्द, हर्नियेटेड डिस्क, स्पाइनल स्टेनोसिस, स्कोलियोसिस और डिजनरेटिव डिस्क रोग सहित रीढ़ की हड्डी से जुड़ी समस्याओं को लेकर अब राजस्थान में 3डी इमेजिंग और नेविगेशन लाने को लेकर एक बड़ा प्रयास किया गया है। इसके बेहतर परिणाम सामने आ रहे हैं और मरीजों के लिए यह बहुत कारगर साबित हो रही है।

यह बात उदयपुर के श्रीराम अस्पताल के ऑर्थोपेडिक स्पाइन सर्जन, ख्यात चिकित्सक डॉ. चिरायु पामेचा ने कही। उन्होंने कहा कि हमारे संस्थान ने 3डी इमेजिंग और नेविगेशन की शुरुआत रीढ़ की हड्डी के विकारों वाले रोगियों के लिए सटीक और न्यूनतम इनवेसिव उपचार विकल्प प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण छलांग लगाई है। यह यहां के रोगियों के लिए बहुत फायदेमंद होगी।

पामेचा ने बताया कि 3डी इमेजिंग तकनीक में रीढ़ की हड्डी और उसके आसपास की संरचनाओं की तीन-आयामी (3डी) छवियां

बनाई जाती हैं। इससे चिकित्सकों को शरीर के भीतर की संरचनाओं को एक स्पष्ट और विस्तृत दृष्टिकोण मिलता है। थ्रीडी इमेजिंग से रीढ़ की हड्डी की अवस्था का सटीक विश्लेषण किया जा सकता है, जिन्हासे समस्याओं की पहचान आसान हो जाती है। नेविगेशन सिस्टम का इस्तेमाल सर्जन को अधिक सटीकता और विश्वसनीयता के साथ ऑपरेशन करने में मदद करता है और सर्जन को प्रत्येक कदम पर सही मार्गदर्शन देता है। इससे रीयल-टाइम सटीकता सामने आती है। सर्जन को ऑपरेशन के दौरान रीढ़ की हड्डी और अन्य संरचनाओं के सटीक स्थान का पता चलता है। इससे वह बिना किसी गलती के उपकरणों को सही स्थान पर रख सकते हैं। ऑपरेशन के दौरान इससे रक्तस्राव और अन्य जटिलताओं का खतरा कम होता है। इसके परिणामस्वरूप मरीज की रिकवरी भी तेज होती है। यह तकनीक बेहतर परिणाम देने और रोगियों के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के साथ-साथ सर्जिकल प्रक्रियाओं की सटीकता बढ़ाने, रिकवरी के समय को कम करने और समग्र रोगी परिणामों में सुधार करने की हमारी क्षमता को बढ़ाती है।

विक्रम संवत्.....

(पृष्ठ दो का शेष)

मालवों ने सत्य ही शक-विजय के बाद अपने गण की स्थिति को कृतयुग की स्थापना समझा और इसी कारण संवत् को गणना कर कृत नाम रखा गया। कृत संवत् का यही अर्थ घटनाओं से असमंजस जान पड़ता है। गौतमीपुत्र शातकर्णि के नासिकवाले शिलालेख में कृत युग के अनुकूल आदर्शों की पुनऱ स्थापना का उल्लेख आया है। सब ओर प्रजाओं को अभय की जलांजलि देकर निर्भय बनाया गया। चातुर्वर्ण्य की व्यवस्था को न माननेवाले शकपल्हव यवनों को हराकर चातुर्वर्ण्य को संकर-रहित बनाया गया। धर्म से कर ग्रहण करके प्रजाहित में उसका विनियोग किया गया। द्विजों का विवर्धन और वेदादि आगम-शाखों की रक्षा की गई।

वासिष्ठीपुत्र ने इसी लेख में अपने पिता के प्रादशी का वर्णन करते हुए उन्हें 'धर्मसेतु' कहा है। हमारे साहित्य में कृतयुग की स्थापना के यही आदर्श माने जाते रहे हैं। इस तरह विक्रम संवत की स्थापना के मूल में यह विचार मालूम होता है कि उसके प्रारभ से लोक में कृतयुग की फिर स्थापना हुई। श्री जायसवाल जी ने पूर्वापर का विचार करने के बाद श्री गौतमीपुत्र शातकर्णि को ही विक्रमादित्य माना था। इस संबंध में जो ऐतिहासिक संगति है उसका ऊपर निर्देश कर दिया गया है। पुरातत्व की उपलब्ध सामग्री के आधार पर जो ऐतिहासिक चित्र निर्मित हो सकता है वह यही है। विक्रमादित्य के संबंध में जैन अनुश्रुति विशेष रूप से उपलब्ध है। उसका वर्णन श्री राजबली पांडेयजी ने अपने लेख में किया है। इस अनुश्रुति के आधार पर शकों के पश्चिम भारत में प्राक्रमण और किसी प्रतापी नरेश द्वारा उनकी पराजय की जो सूचना मिलती है उसका भी उपर्युक्त ऐतिहासिक संगति से मेल बैठ जाता है। हाँ, जैन अनुश्रुति की यह विशेषता है कि उसमें इस सम्राट की संज्ञा विक्रमादित्य कही गई है।

ये विक्रमादित्य मालव गण में थे या सातवाहन-वंश में, इसका निर्णय करने के पूर्व पुरातत्व को अन्य सामग्री के लिये रुक जाना पड़ता है। विक्रमादित्य और उनके नवरत्नों की जो कमाएँ हैं उनका जन्म भी जैन अनुभुति के बाहर अन्य क्षेत्रों में हुआ, अतएव नवरत्नों का संबंध संवत् के संस्थापक विक्रमादित्य के साथ जोड़ना अनिवार्य नहीं है। हमारी सम्मति में कालिदास जिन विक्रमादित्य के समय में थे वे गुप्तवंशी सम्राट् चद्रगुप्त विक्रमादित्य ही हैं। विक्रम संवत् की तरह आरंभ की शताब्दियों में शक संवत या गुप्त संवत् के साथ भी उसके संस्थापक के नाम या संवत् के नाम का उल्लेख शिलालेखों में नहीं पाया गया। अतएव विक्रम संवत् के संबंध में ही यह विशेष रूप से नहीं है। जान पड़ता है कि सभी संवत्सरों की गामा शुरू में इसी तरह निर्विरोध रूप से होती थी।

शक संवत् का स्पष्ट नाम सर्वप्रथम शक 180 (-058) की एक घटना के संबंध में एक जैन ग्रंथ की पुष्पिका में पाया है (दे. माइसोर पुरातत्व विभाग की रिपोर्ट, 1908-9 पृ. 31, 1909.10, पैरा 115)। (स्मिथ, प्राचीन इतिहास, 493, पाद टिप्पणी)

(विक्रम और इतिहास दर्शन ग्रंथ में संग्रहित)

- प्रस्तुति : डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

अकाल के अनाज़.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

इसमें छाल से मचली की ईस और गर से पागे, पाये बनाये जाते हैं। यह खटिया बहुत ही अदरपदर यानी हल्की और कोमल तथा नहीं के बराबर वजन लिए होती है सो बड़े यत्न से सम्भाल कर देवता के स्थान पर ले जाई जाती है।

यह खाट दाईमां, नाईन तैयार करती है। इसके लिए उसका पारिश्रमिक दो चंदकिया, दो रोटी दी जाती है। खाटली की बुनाई सूत के कच्चे धागे अथवा कच्चे सूत से की जाती है। बुनावट कई तरह की होती है पर दस्तूर रूप में एक धागा दूसरे से क्रोस करता आंकड़ बांकड़ रीत से लगाकर बुना जाता है।

भैरू देव को रिझाने के लिए बस्ती के स्त्री-पुरुष मिलकर देवस्थान पर जाते हैं। उनके साथ मंगलसूचक ढोलवाला तथा बांकियावाला आगे-ही-आगे जुलूस रूप में चलता रहता है। मन से आस्थापूर्वक देव मनावण पर अन्त में अकाल की मारामारी से छुटकारा मिलता ही है।

महामारी, हैजा, प्लेग जैसी विपदाएं सुकाल नहीं देतीं। आज तो सारे विश्व में कोरोना का भयंकर भय और त्रासदी व्याप्त है। आंकड़े दिल दहला देने वाले हैं। अब पूरा विश्व एक है पर तब ऐसा नहीं था। अकाल में अनाज और पानी की जबर्दस्त तंगी रहती है। चारे पानी के अभाव में सबसे अधिक मौतें पशुओं की होती हैं।

मरूस्थलीय इलाकों में भूरट नामक घास अनाज के रूप में काम में ली जाती है। डॉ. केसरीमल 'केसरी' के अनुसार बाजरे के सिट्टे की तरह इसमें भी सिट्टा लगता है जो कांटेदार चुभनेवाला होता है। इसमें हल्के पीले रंग के बीज इसबगोल के दानों की तरह होते हैं। बाजरे के आटे में समान अनुपात में मिलाकर इसकी रोटियां बनाकर खाया जाता है।

अकाल से मुकाबला करने में जंगल के कंद मूल, फल, फूल भी बड़े सहायक रहे हैं। ऐसे-ऐसे जमीकंद मिलते हैं जिनके खाने से सप्ताह, दो-दो सप्ताह तक भूख नहीं लगती परन्तु जंगलों के विनाश ने यह सामग्री भी उजाड़ दी है। महुआ तो आदिवासियों का प्राण रहा है। इसकी कोई चीज ऐसी नहीं जिसे आदिवासी काम में न लेते हों। फल फूल छाल लकड़ी सबकुछ बड़ी उपयोगी है। वनों के नष्ट होने से जड़ी-बूटियों की मूल्यवान सम्पदा से हम हाथ धो बैठे। यह सारी संस्कृति समाप्तप्राय हो गई। वह समय दूर नहीं है जब इनकी पहचान और नाम भी हमारे लिए शोध और अनुसंधान तक की पकड़ से परे हो जायेंगे।

अकाल हो चाहे महाअकाल, कितनी ही परेशानी हो परन्तु ग्रामीणजन अपना रंजन कभी नहीं छोड़ेंगे बल्कि गाने में उसकी पीड़ा-व्यथा प्रकट कर हल्के ही होंगे। इस प्रकार का साहित्य तत्कालीन परिस्थिति का जीवन्त चित्रण करता है और सामाजिक परिस्थितियों का ऐतिहासिक दस्तावेज बनता है।

वर्षा की कमी होने के कारण राजस्थान में निरन्तर अकाल पड़ते रहे हैं। यह क्रम सदियों से जारी है। अकाल के सम्बन्ध में यह कहावत यहां के लोगों के मुख पर सुनने को मिल जाती है जिसमें प्रति तीसरे वर्ष आधा अकाल तथा आठवें वर्ष पूरा अकाल पड़ना कहा गया है- 'तीजो कुरियो आठमो काल।'

अकाल के अनाज से शासन और सत्ता की कमान कोसों दूर है। जीवन रक्षक लोकसम्पदा का दोहन हमारी पारम्परिक संस्कृतिधर्मी विरासत को विराम देने की नासमझ तथा नाइन्साफी है। यदि यही हाल रहा तो वह समय दूर नहीं है जब हमें अपनी इस मूल्यवान संस्कृति की पहचान भी नहीं रहेगी और तब हमारे लिए इसकी शोध और अनुसंधान की पकड़ भी मुश्किल हो जायेगी। ऐसे में अकाल के अनाज को हम किसी संग्रहालय में भी देख पायेंगे क्या जो बड़ी मुश्किल से उदयपुर के माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध संस्थान के जनजाति संग्रहालय में सहेज कर रखे हुए हैं।

मैं तो एक शुभकामना हूं

वेदव्यास

तीन सौ पैंसठ दिन
मैं तो एक शुभकामना हूं
मेरी स्मृतियां
अकाल और सुकाल में
युद्ध और शांति में
संघर्ष और मुक्ति में
एक साथ घूमती हैं।
मुझे तुमसे वह सब लेना है
मुझे तुम्हें वह सब देना है
जो अकाल
प्रकृति से लेता है,
और बीज
पेड़ को देता है।
मेरे शब्द
कोई अहसान नहीं हैं
मेरे अर्थ
कोई पहचान नहीं हैं
यदि मेरे विचार
तुम्हारे सहयात्री हैं
तो मेरा नाम
तुम्हारा ही जयघोष है।
जन्म और मृत्यु के बीच
जो भी मनुष्य के पास है
वह केवल उसका विश्वास है
तुम लहर की तरह
सागर में बहो, और
नगारे पर डंके की तरह बजो
ये नई तारीख, एक दिन
धनुष का बाण अवश्य बनेगी।

युवा ही देश का भविष्य और राष्ट्र निर्माता : डॉ. पंड्या

उदयपुर (ह. सं.) । गायत्री परिवार की युवा इकाई दिया राजस्थान के संयोजन में यूनिसेफ और सुखाड़िया विवि के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय युवा महोत्सव आरोहण का समापन 25 दिसंबर को हुआ। संयोजक प्रणय त्रिपाठी ने बताया कि समापन सत्र का शुभारंभ मुख्य अतिथि मार्गदर्शक वक्ता देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार के प्रति कुलपति और अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पंड्या, कार्यक्रम अध्यक्ष सांसद मन्नालाल रावत, विशिष्ट अतिथि दयालबाग शिक्षण संस्थान के वरिष्ठ निदेशक प्रोफेसर पी. के. कालरा, कुकु एफएम के संस्थापक लालचंद बिसु द्वारा स्वामी विवेकानंद प्रतिमा पर माल्यार्पण और भारत माता पूजन और देव मंच पर दीप प्रज्वलन से हुआ। इस दौरान अतिथियों ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रांतीय विजेता झुंझुनूं, जयपुर और बाड़मेर की महाविद्यालय टीम को पुरस्कार प्रदान किए।

डॉ. चिन्मय पंड्या ने युवाओं से स्वामी विवेकानंद से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण का लक्ष्य बनाने का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि हमारे देश का युवा हर चुनौती का सामना करने में सक्षम हैं, इसमें कोई दोराय नहीं है। यह इक्कीसवीं सदी युवाओं की ही है। जिस देश का युवा सशक्त हो, जो देश युवाओं का देश हो उस देश को विकसित राष्ट्र बनने से कोई नहीं रोक सकता। युवा ही देश का भविष्य है और राष्ट्र निर्माता होता है। मन्नालाल रावत ने डॉ चिन्मय पंड्या के नेतृत्व में गायत्री परिवार की युवा पीढ़ी के माध्यम से सामाज के नव निर्माण पर विश्वास जताया। लालचंद बिसु ने युवाओं को कठिन परिस्थितियों से नहीं डरने के लिए प्रेरित किया। प्रोफेसर पी. के. कालरा ने युवाओं को नि:स्वार्थ सेवा कार्यों के लिए आगे आने का आह्वान किया।

सम्पूर्ण समारोह डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन (दिया) राजस्थान कार्यसमिति प्रांतीय संयोजक लोकेश शर्मा, उदयपुर इकाई के रमेश असावा, दिया प्रांतीय सलाहकार समिति संयोजक प्रोफेसर आईआईटी जोधपुर डॉ. विवेक विजय, हेमंत श्रीमाली और सुखाडिया विश्विद्यालय के प्रोफेसर बालूदान बारहठ के निर्देशन में किया गया।

'खानों में व्यावसायिक स्वास्थ्य सेवाएँ-वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियाँ और आगे की राह' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज में खान सुरक्षा महानिदेशालय उत्तर पश्चिमी अंचल उदयपुर के तत्वावधान में 'खानों में व्यावसायिक स्वास्थ्य सेवाएँ-वर्तमान परिदृश्य, चुनौतियाँ और आगे की राह' पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। मुख्य अतिथि खान सुरक्षा महानिदेशक, उज्ज्वल ताह और विशिष्ट अतिथि निदेशक, खान एवं भू विज्ञान विभाग, राजस्थान भगवती प्रसाद थे। आर. टी. मांडेकर, खान सुरक्षा उपमहानिदेशक, उत्तर पश्चिमी अंचल, अरुण मिश्रा, सीईओ हिंदुस्तान जिंक लि. एवं मांगीलाल लुणावत, अध्यक्ष, उदयपुर चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री सम्मानित अतिथि थे।

कार्यशाला में डॉ. पी. के. सिसोदिया, एक्सपर्ट कंसलटेंट राजस्थान सरकार, डॉ. आर. आर. तिवारी, डायरेक्टर, एनआईआरईएचए, डॉ. डी. कोलेकर, डायरेक्टर (मेडिकल), डॉ. बी. बी मंडल, एसोसिएट प्रोफेसर, आईआईटी खड़गपुर, डॉ. एस. के. सुमन, एसोसिएट प्रोफेसर, ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज, डॉ. प्रदीप कस्वां, एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. मिहिर रूपानी, वैज्ञानिक-इ, एनआईओएच, ड़ॉ एस के भंडारी, एचओडी मेडिकल, मेस्सेर्स जेके लक्ष्मी सीमेंट, डॉ. देवाशीष नियोगी, डॉ. दीपक गौतम, हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड सीईओ डॉ. एस के चौधरी, सीएमओ सीमेंट लिमिटेड इन प्रमुख वक्ताओं ने अभिभाषण दिया।

खान सुरक्षा महानिदेशक उज्ज्वल ताह ने कहा कि असंगठित क्षेत्र की खदानों में कार्यरत खनिकर्मियों की व्यावसायिक व्याधियों का पता लगाने, उपचार, मुआवजा तथा पुनर्वास की सम्बन्ध में श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की सभी संस्थानों जैसे कारखाना सलाह सेवा एवं श्रम संस्थान महानिदेशालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम तथा राज्य सरकार खान एवं भू विज्ञानं विभाग, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थय अधिकारी कार्यालय, राष्ट्रीय व्यवसाइक संस्थान तथा विभिन्न ट्रेड यूनियन के साझा प्रयास से असंगठित खनन क्षेत्र के लिए प्रभावशील रण नीति बनाने की जरुरत है और यह आयोजन इस दिशा में आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

भगवती प्रसाद ने देश के बुनियादी ढांचे, ऊर्जा और औद्योगिक विकास में खनन क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया।

48वें खान सुरक्षा सप्ताह का समापन

उदयपुर (ह. सं.)। खान सुरक्षा महानिदेशालय (डीजीएमएस) के तत्वावधान में 48वें खान सुरक्षा सप्ताह का समापन हुआ। डबोक स्थित उदयपुर सीमेंट वर्क्स में हुए समारोह में उत्कर्ष एवं सुरक्षित कार्य प्रणाली एवं उनकी गुणवत्ता के मानकों के आधार पर विभिन्न खदानों के मध्य 250 पुरस्कारों का वितरण किया गया।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि आर.टी. माण्डेकर (डिप्टी डायरेक्टर जनरल डीजीएमएस) एवं जगदीश राज श्रीमाली (यूनियन संरक्षक) राजस्थान इंटक थे। अध्यक्षता नवीनकुमार शर्मा, (पूर्णकालिक निदेशक, उदयपुर सीमेंट वर्क्स) ने की। कोर्डिनेटर बी दयासागर, डायरेक्टर (माइंस सेफ्टी) (उदयपुर रीजन), को-कोर्डिनेटर विशाल गोयल, डिप्टी डायरेक्टर (माइंस सेफ्टी), कन्वेनर के पी सिंह, वाइस प्रेसिडेंट, मांइस उदयपुर सीमेंट वर्क्स और सेकेट्री सी एस दाधीच थे।

आर.टी. माण्डेकर ने माइंस में होने वाली कैजुअल्टी एवं नवाचार के बारे में कहा कि हमारी जर्नी 1902 से शुरू हुई थी। आज हमें 125 साल पूरे हुए हैं लेकिन जबसे हमने जर्नी शुरू की थी तब से प्रति 1000 पर प्लस वन थी जो आज घटकर पॉइंट वन हो गई है लेकिन हम यहीं रुकने वाले नहीं हैं। हम इसे जीरो पर लाने के लगातार प्रयास कर रहे हैं। अभी हमारा मुख्य फोकस डीजीटाईशन पर है। सेफ्टी और हेल्थ पर हमारा मुख्य ध्यान रहता है।

नवीनकुमार शर्मा ने बताया कि समारोह में डीजीएमएस के अधिकारी गण (सी. पलानी मलाई डायरेक्टर (इलेक्ट्रिकल), टॉम मैथ्यू, डायरेक्टर (एनडब्ल्यूजेड) एवं जे. पी. वर्मा, डायरेक्टर (मैकेनिकल), निरंजन कुमार, डिप्टी डायरेक्टर (माइंस सेफ्टी) संकेत कुमार, डिप्टी डायरेक्टर(मैकेनिकल) एवं एस. शंकरैया, डिप्टी डायरेक्टर (इलेक्ट्रिकल) एवं 52 माइंस के ओनर्स, माइंस ऐजेंट, माइंस मैनेजर एवं अधिकारियों ने भाग लिया।

आयोजन में विभिन्न कंपनियों के प्रोडक्ट्स को 30 स्टॉल के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। मुख्य अतिथि ने इन स्टॉलों का रिबिन काटकर शुभारंभ किया। आयोजन में उदयपुर क्षेत्र की सभी सीमेंट कंपनियां, हिन्दुस्तान जिंक, मार्बल माइंस, सोप स्टोन माइंस व अन्य खदानों के तकरीबन 1000 से ज्यादा अधिकारियों एवं वर्करों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम में खान सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए और उत्कृष्ट कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न कैटेगिरी में 250 पुरस्कार वितरित किये गये।

SAI TIRUPATI UNIVERSITY, UDAIPUR

(Approved under Section 2(f) of UGC Act 1956)

Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in

ADMISSION OPEN 2024-25

PIMS PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

• M.B.B.S. • MD/MS • M.Sc. in Medical Sciences | Contact : 95878 90081, 95878 90096

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF PARAMEDICAL SCIENCES
9257016003, 9587890142

• Diploma (Approved by RPMC)
- Radiation Technology
- Operation Theater Technology
- Medical Laboratory Technology
- ECG Technology
- Cath Lab Technology.
- Dialysis Technology,Blood Bank Technology,
- Endoscopy Technology,
- EEG Technology, Ophthalmic
- Technology

• B.Sc.
Medical Lab Technology, Ophthalmic Technology, Radio Imaging Technology

PIMS VENKATESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY
(Approved by PCI) 9257016004, 9587890082

• D. Pharm • B. Pharm

PIMS VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY
9257016002, 958789082

• B.P.T. • M.P.T.

PIMS RESEARCH PROGRAM
9587890082, 9358883194

- Ph.D. (Nursing)
- Ph.D. (Anatomy)
- Ph.D. (Bio-Chemistry)
- Ph.D. (Microbiology)
- Ph.D. (Pharmacology)
- Ph.D. (Physiology)
- Ph.D (Management)
- Ph.D (Physiotherapy)

PIMS VENKTESHWAR SCHOOL/COLLEGE OF NURSING
9587890082, 9257016001

• G.N.M. • B.Sc. (Nursing)

• M.Sc. Nursing
Child Health, Mental Health, Community Health, Midwifery and Obstetrical, Medical Surgical

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY
9672978017, 9587890063

• Fashion Design • Journalism & Mass Communication • Interior Design
(Graduation/ Post Graduation/ Diploma/ Advance Diploma)

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES
9672978017, 9672978038

• BBA (International Business)
• MBA (Hospital Administration & Health Care Management)

PIMS INSTITUTE OF COMPUTER SCIENCES
9672978017, 9587890063

• Bachelor of Computer Application (B.C. A)

PIMS PACIFIC DENTAL COLLEGE & HOSPITAL
(Recognised by DCI) 9116132834

• B.D.S • M.D.S

ADMISSION HELPLINE : 9587890082, 9358883194

PIMS HOSPITAL, UMARDA, UDAIPUR

NABH ACCREDITED

Emergency : 0294-3510000

EMAIL : INFO@PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
WEB : WWW.PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
UMARDA RAILWAY STATION ROAD, UDAIPUR (RAJ.)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं
मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत, उप संपादक : अर्थांक भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।